सम्पादकीय
मण्डलों को सशक्त और प्राणवान बना रहा है पाक्षिक प्रज्ञा अभियान 2

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
विशाल मंचों से दिया युगऋषि का संदेश 4

दुबई में पहुँचा ज्योति कलश
छाई दिव्य आलोक के विस्तार की उमंग 6

इटली में आयोजित हुआ विश्व सम्मेलन
शान्तिकुञ्ज ने किया भारत का प्रतिनिधित्व 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जुलाई 2025

वर्ष : 38, अंक : 02
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 जुलाई 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-6

समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।

समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी सुसंस्कारिता के लिए चार प्रमुख आधार माने गए हैं। इन्हें आध्यात्मिक, आंतरिक वरिष्ठता की दृष्टि से उतना ही महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए, जितना कि शरीर के लिए अन्न, जल, वस्त्र और निवास को अनिवार्य समझा जाता है।

समझदारी का तात्पर्य है-दूरदर्शी विवेकशीलता का अपनाया जाना। अदूरदर्शिता तुर्त-फुर्त अधिक सुविधा संपादन के लिए लालायित रहती है और इस उतावली में ऐसे काम करने में भी नहीं झिझकती, जिनकी भावी परिणति बुरे किस्म की हो सकती है। ऐसी नासमझी के रहते आज का, अभी का लाभ ही सब कुछ दीख पड़ता है और भविष्य की संभावनाओं के संदर्भ में सोचने तक की फुर्सत नहीं मिलती।

दूरदर्शिता उस अनुभवी किसान की गतिविधियों जैसी हैं, जिसको खेत जोतने, बीज बोने, खाद-पानी देने, रखवाली करने में होने वाले आरंभिक हानि और कष्टों को शिरोधार्य करना पड़ता है। दूरदर्शिता उसे बताती है कि इसका प्रतिफल उसे समयानुसार मिलने ही वाला है। एक बीज के दाने के बदले सौ दाने उगने ही वाले हैं। पुण्य-परमार्थ में भविष्य को उज्ज्वल बनाने वाली संभावनाएँ सन्निहित हैं। संयम का प्रतिफल वैभव और पौरुष के रूप में दृष्टिगत होता ही है। अध्यात्म की भाषा में इसी को तृतीय नेत्र खुलना भी कहते हैं, जिसके आधार पर विपत्तियों से बचना और उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं का सृजन संभव हो सकता है।

ईमानदारी सुसंस्कारिता का दूसरा चिह्न है। कथनी और करनी को एक-सा रखना ईमानदारी है। आदान-प्रदान में प्रामाणिकता को इसी सिद्धांत के सहारे अक्षुण्ण रखा जाता है। विश्वसनीयता इसी आधार पर बनती है। बड़े उत्तरदायित्वों को उपलब्ध करने और उनका निर्वाह करने में ईमानदार ही सफल होते हैं। इस सद्गुण को सुसंस्कारिता का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष माना गया है। इसे अपनाने वाले ईमानदारी और परिश्रम की कमाई से ही अपना काम चला लेते हैं। **उनकी गरीबी भी ऐसी शानदार होती है, जिस पर अमीरी के भंडार को निछावर किया जा सके ।**

जिम्मेदारी सुसंस्कारिता का तीसरा पक्ष है। मनुष्य अनेक जिम्मेदारियों से बँधा हुआ है। स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने की, जीवन संपदा का श्रेष्ठतम सदुपयोग करने की, लोक-परलोक को उत्कृष्ट बनाने की जिम्मेदारियाँ जो निभाना जानते हैं, वे ही संतोष, यश और आरोग्य का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मानव जन्म के साथ जुड़ी हुई तमाम जिम्मेदारियों को निबाहना तभी बन पड़ता है, जब निजी जीवन में संतोष और सत्प्रवृत्ति संवर्धन जैसे लोकमंगल के कार्यों के लिए अंतःकरण में समुचित उत्साह उमंगता हो, जब अपनी संकीर्ण स्वार्थपरता पर अंकुश लगाया जाए एवं औसत व्यावहारिक स्तर का निर्वाह स्वेच्छापूर्वक स्वीकार किया जाए।

बहादुरी सुसंस्कारिता का चौथा चरण है। दैनिक जीवन में अनेकानेक उलझनें आती रहती हैं, उन सबसे निपटने के लिए साहस होना आवश्यक है। गुण, कर्म, स्वभाव की गहराई तक घुसे जन्म-जन्मांतरों के कुसंस्कारों से भी निरंतर महाभारत लड़ने का कृत्य करना पड़ता है, जिसमें गीताकार ने अर्जुन को प्रवृत्त होने के लिए उद्धत किया है। समाज में अवांछनीय तत्वों की, अंधविश्वासों, कुप्रचलनों और अनाचारों की कमी नहीं है। **इसके लिए सज्जन प्रकृति के लोगों को संगठित करना भी आवश्यक है।** ये सभी बहादुरी के चिह्न हैं। सभ्यता के सर्वतोमुखी क्षेत्र को प्रकाशित करने के लिए जहाँ जागरूकता, पराक्रम, प्रयत्न अपनाए जाने की आवश्यकता है, वहीं सुसंस्कारिता को भी बढ़ाने और अपनाने के लिए भरपूर प्रयत्न करते रहने की भी अनिवार्य आवश्यकता है।

देव का वरण करें, दानव का नहीं

सृजन और विनाश की, उत्थान और पतन की शक्तियाँ इस संसार में निरन्तर अपने-अपने काम कराती रहती हैं, इन्हीं को देव और दानव के नाम से जाना जाता है। मनुष्य को यह छूट है कि वह देवत्व और दानवत्व में से किसी एक का वरण अपनी समझदारी के आधार पर कर ले और तद्नुरूप सुख-शान्ति अथवा पतन-पराभव की प्रतिक्रिया सहन करे। उठने अथवा गिरने का निर्णय हमारा स्वयं का होता है, इसी विभूति के कारण मनुष्य को अपने भाग्य का निर्माता एवं भविष्य का अधिष्ठाता कहा जाता है।

प्रसंग इन दिनों की परिस्थितियों के संदर्भ में उनका कारण जानने और उनका समाधान निकालने का है। गहरी खोज-बीन इसी निष्कर्ष पर पहुँचती है कि जनमानस ही है, जो अपने लिए इच्छित स्तर की परिस्थितियाँ न्यौत बुलाता है। कोई क्या कर सकता है यदि हानि को लाभ और लाभ को हानि समझने की मान्यता बना ली जाये? कुरूप चेहरा दर्शाने के लिए दर्पण को आक्रोश का भाजन बनाया जा सकता है, पर इससे चेहरे पर छायी कुरूपता या कालिख को भगाया नहीं जा सकता। अच्छा हो, हम कठिनाइयों के कारण और उनके समाधान अपने भीतर ही ढूँढ़ें और यदि उत्कर्ष अभीष्ट हो, तो इसकी तैयारी के रूप में आत्मसत्ता को ही तद्नुरूप बनाने के लिए अपना पुरुषार्थ नियोजित करें। क्रियाएँ शरीर के माध्यम से बन पड़ती हैं, सोचने की खिचड़ी मस्तिष्क में पकती है, किन्तु दोनों को इसके लिए प्रेरणा व ऊर्जा मिलनी अंतराल की गहराई से आरंभ होती है। परिवर्तन-शोधन इसी का होना चाहिए।

विज्ञान ने प्रदूषण उगलने वाले विशालतम कारखाने बनाये सो ठीक है, पर उनके द्वारा उत्पन्न होने वाली विषाक्तता और बेरोजगारी के संबंध में भी तो विचार किया जाना चाहिए था। जिन्होंने भौंडा साहित्य सृजा और फिल्में बनाईं, उनको अपना लाभ प्रधान दिखा होगा, अन्यथा प्रचार साधनों में अवांछनीयता का समावेश करते समय वे हजार बार विचार करते कि निजी लाभ कमाने के अत्युत्साह से लोकमानस को विकृत करने का खतरा तो उत्पन्न नहीं किया जाना चाहिए।

युद्धोन्माद का वातावरण बनाने और सरंजाम जुटाने में किसी वर्ग विशेष को लाभ ही लाभ सूझा होगा, अन्यथा उस आक्रमण-प्रत्याक्रमण के माहौल से असंख्यों मनुष्यों की, परिवारों की भयंकर बर्बादी सूझ ही न पड़ी हो, ऐसी बात नहीं है। अपने को सर्व समर्थ एवं सर्व सम्पन्न बनाने के लिए उभरे उन्माद ने ही शोषण से लेकर आक्रमण तक के अनेकों कुचक्र रचे हैं। इतना दुस्साहस तभी बन पड़ा, जब व्यक्ति ने अपनी चेतना को अति निष्ठुर बना लिया। अन्यान्यों को इस त्रास से भारी कष्ट सहना पड़ सकता है, इस विचार को दर गुजर करने के उपरान्त ही कोई अपराधी, आक्रामक एवं आतंकवादी बन सकता है।

नशीले पदार्थों के उत्पादक एवं व्यवसायी तस्कर यदि अनुमान लगा सके होते कि उनका व्यक्तिगत लाभ किस प्रकार असंख्य अनजानों का विनाश करेगा, तो निश्चय ही वे इस अनर्थ से हाथ खींच लेते और गुजारे के लिए हजार साधन ढूँढ़ लेते।

पशु-पक्षियों को उदरस्थ करते रहने वालों के मन में यदि ऐसा कुछ सूझ पड़ा होता कि यदि उन निरीहों की तरह हम स्वयं इतनी भयंकर पीड़ा सहते हुए जान गँवाने के लिए बाधित किये गये होते, तो हम पर क्या बीतती। उस छटपटाहट को निजी अनुभूति से जोड़ सकने वाला कदाचित् ही छुरी का निर्दय प्रयोग कर पाता। यह अवांछनीयताओं का प्रवाह, प्रचलन, जिस भावना क्षेत्र की विकृति के कारण उत्पन्न होता है, उस पर रोक-थाम के लिए भी कुछ कारगर प्रयत्न किए जाएँ।

संवेदनाओं में करुणा का समावेश होने पर दूसरे भी अपने जैसे ही दीखने लगते हैं। कोई समझदारी के रहते अपनों पर आक्रमण नहीं करता, अपनी हानि सहन नहीं करता। इसी प्रकार यदि यह आत्मभाव समूचे समाज तक विस्तृत हो सके, तो किसी को भी हानि पहुँचाने, सताने की बात सोचते ही हाथ-पैर काँपने लगेंगे। जिसने अपनी क्रिया एवं विचारणा में इस आत्मभाव का समावेश किया हो, वह आत्मीयता, करुणा, सहकारिता और सेवा-साधना के लिए निरन्तर आकुल-व्याकुल रहेगा।

नशा पीकर, बेसुध हो जाने पर समस्या से केवल भागा जा सकता है, क्योंकि जब होश-हवास ही दुरुस्त नहीं, तो समस्या क्या? और उसका समाधान ढूँढ़ने का क्या मतलब? पर जब मानवी गरिमा की गहराई तक उतरने की स्थिति अपनी भी बन पड़े, तो फिर माता जैसा वात्सल्य हर आत्मा में उभर सकता है और हित-साधना के अतिरिक्त और कुछ सोचते बन ही नहीं पड़ता। तब उन उलझनों में से एक भी बच नहीं सकती, जो आज हर किसी को उद्विग्न-आतंकित किये हुए है।

(वाङ्मय 29, पृष्ठ 6 .39 से संकलित, सम्पादित)

मण्डलों को सशक्त और प्राणवान बना रहा है पाक्षिक प्रज्ञा अभियान

जन्मशताब्दी वर्ष में युगचेतना विस्तार के लिए हो रहा है एक नई क्रान्ति का अभ्युदय

प्रज्ञा मण्डल

युग निर्माण के तीन चरण हैं-व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण। व्यक्तिगत उपासना और जीवन साधना से व्यक्तित्व निखरता है, आत्मबल बढ़ता है, पात्रता का विकास होता है और व्यक्ति नर से नारायण, मानव से महामानव बनने की दिशा में बढ़ता जाता है। परिवार निर्माण का अर्थ है परिवार के सदस्यों में परस्पर प्रेम, विश्वास, सहकारिता, श्रमशीलता, शालीनता जैसे सद्गुण और संस्कारों का सतत अभ्यास-विकास। इन दोनों में व्यक्तिगत पुरुषार्थ की महत्ता अधिक होती है।

समाज निर्माण के लिए सामूहिक पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। परम पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि हम सब सागर की उन बूँदों के समान हैं, जो लहरों के रूप में एक साथ उठती हैं और एक साथ गिरती हैं। उसी प्रकार किसी भी समाज के विचार और संस्कार उस समाज के हर व्यक्ति को प्रभावित करते ही हैं। किसी धार्मिक स्थल के आसपास रहने वाले व्यक्ति पर उसके संस्कारों का बिल्कुल प्रभाव न हो, यह संभव नहीं। कीचड़ और बदबू वाले क्षेत्र में रहने वाले व्यक्ति के स्वास्थ्य पर उसका प्रतिकूल प्रभाव न पड़े, यह भी संभव नहीं। व्यक्ति और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है। अतः युग निर्माण के लिए व्यक्तित्व परिष्कार और समाज निर्माण दोनों ही साथ-साथ हों, तभी उसके श्रेष्ठ परिणाम परिलक्षित होंगे।

संगठन में बड़ा बल है। हम सब जानते हैं कि नन्हें रेशे निर्बल होते हैं, लेकिन जब वे संगठित होकर मोटे रस्से का रूप ले लेते हैं तो फिर वे बलवान पशुओं को भी बाँध लेते हैं। अकेली सींकें सरलता से टूट जाती हैं, लेकिन अनेक सींक मिलकर जब झाड़ू का रूप ले लेती हैं, तब उनकी उपयोगिता सर्वविदित है। जितनी भी सामाजिक क्रान्तियाँ हुई हैं, वे संगठित प्रयासों से ही हो पाई हैं।

युग निर्माण के लिए परम पूज्य गुरुदेव ने **'भली सोच और अच्छी चाह'** वाले व्यक्तियों को संगठित कर उन्हें **'मशाल'** बना दिया। विराट स्तर पर हम इसे गायत्री परिवार, अखण्ड ज्योति परिवार, प्रज्ञा परिवार जैसे अनेक नामों से जानते हैं। लेकिन यह मशाल भी छोटी-छोटी इकाइयों से मिलकर बनी है, जो हर नगर, गाँव, क्षेत्र में सक्रिय हैं, इन्हें पूज्य गुरुदेव ने **'प्रज्ञा मण्डल'** नाम दिया। उन्होंने हर मोहल्ले, गाँव में न्यूनतम पाँच लोगों से युग निर्माण की गतिविधियाँ आरंभ करने और क्रमशः 1 से 5 तथा 5 से 25 के क्रम में बढ़ते जाने का निर्देश दिया। अपने मिशन में संगठन की बुनियादी इकाई यह 'प्रज्ञा मण्डल' ही है। जिस संगठन में महिलाएँ ही जुड़ी हैं, उन्हें **'महिला प्रज्ञा मण्डल'** तथा युवाओं के संगठन को **'युवा प्रज्ञा मण्डल'** कहा जाता है। इसी प्रकार स्वाध्याय के लिए मुख्य रूप से समर्पित मण्डलों को **'स्वाध्याय मण्डल'** कहा गया। नाम कोई भी हो, काम सबका एक ही है, वह है व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण, राष्ट्र निर्माण और युग निर्माण के प्रवाह को गति देते जाना।

आध्यात्मिक दृष्टि से भी संगठित प्रयास अधिक प्रभावशाली होते हैं। आगे जैसे-जैसे श्रद्धा और साधना परिपक्व होती जाती है, वैसे-वैसे एकांत की भी आवश्यकता बढ़ती जाती है, लेकिन जिनकी आस्था प्रबल है, उनका भी दायित्व बनता है कि वे नए लोगों में उत्साह, संकल्प, ऊर्जा जगाने के लिए प्रयत्नशील हों। अतः गायत्री परिवार के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को किसी न किसी प्रज्ञा मण्डल का सक्रिय सदस्य होना ही चाहिए और उसकी गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेना ही चाहिए।

आत्मिक उत्कृष्टता की चाह किसे नहीं होती? लेकिन इसके लिए आदर्शों को अपनाने का, अच्छाई एवं सच्चाई की राह पर चलने का साहस व संकल्प हर किसी में नहीं होता। कमजोर मनोबल के लोगों में इस साहस का संचार करने के लिए ही संगठित प्रयासों की आवश्यकता होती है। हमारी संस्कृति में इसीलिए सत्संग, रामायण पाठ, भागवत् कथा, मंदिर दर्शन, तीर्थयात्रा जैसी परम्पराओं का प्रचलन है।

समाज में युग की माँग के अनुरूप नवचेतना जागरण के लिए समर्पित प्रज्ञा मण्डलों के लिए भी परम पूज्य गुरुदेव ने कुछ आवश्यक कार्यक्रम निर्धारित किए हैं। ये भी उनके बताये पाँच मूलभूत कार्यक्रम-उपासना, साधना, आराधना, समयदान एवं अंशदान से ही जुड़े हैं। प्रज्ञा मण्डलों की नियमित गतिविधियों में आरती, पूजा, जप, ध्यान, यज्ञ, स्वाध्याय, सत्संग आदि का समावेश है। ये सभी क्रम आत्मपरिष्कार एवं व्यक्तित्व विकास, आस्था संवर्धन जैसे प्रयोजनों को पूरा करते हैं। इनके अलावा हर प्रज्ञा मण्डल की गतिविधियों में विचारक्रान्ति, सेवा-सहयोग जैसी परमार्थपरायणता की भावना और लोकमंगल की गतिविधियों का समावेश होना ही चाहिए, तभी सही मायनों में युग निर्माण का लक्ष्य पूरा हो सकेगा।

मण्डलों को प्रभावशाली कैसे बनाएँ

देश में गाँव-गाँव, नगर-नगर में गायत्री परिवार के लाखों प्रज्ञा मण्डल हैं, लेकिन देखा जाता है कि वे उतने प्रभावी ढंग से संचालित नहीं हो पा रहे, जिसकी अपेक्षा परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी ने की थी। अगर इनके कारणों को खोजा जाये, तो पता चलता है कि हम अपने मण्डलों का उद्देश्य समझ ही नहीं पाये या समझे हैं तो उनके लिए समर्पित नहीं हो पाये। शक्तिपीठों या बड़े केन्द्रों पर पूजापाठ की गतिविधियाँ चलती देखी जाती हैं, अनेक स्थानों पर रचनात्मक कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं, लेकिन **ज्योति से ज्योति जलाने और जनजीवन को प्रकाशित कर लोगों की आस्थाओं को बदलने का जो मूलभूत कार्य इन मण्डलों का है, वह प्रभावशाली ढंग से पूरा होता दिखाई नहीं दे रहा।** हमारे कार्यकर्त्ताओं की सक्रिय मण्डल जैसी संगठित और प्रभावशाली इकाइयाँ प्रायः जिले के हर किलो-दो किलोमीटर के क्षेत्र में होनी ही चाहिए, जो युग निर्माण आन्दोलन की धधकती लाल मशाल की तरह सामाज में प्रगतिशील विचारों, आस्थाओं और भावनाओं का संचार कर सकें।

कमी कहाँ रह जाती है? यह विचार किया जाये तो पता चलता है कि कार्यकर्त्ता इकट्ठे तो होते हैं, लेकिन तन मिलते हैं, मन नहीं मिल पाते। अधिकांश लोग पुरानी सामाजिक परम्पराओं में ढले होते हैं, जो अपनी सुविधा के अनुसार साथ-साथ पूजापाठ, गीत-संकीर्तन जैसे कार्यक्रमों को पूरा करके ही अपनी जिम्मदारी पूरी मान लेते हैं। उन्हें पूज्य गुरुदेव की आशा-अपेक्षाओं का ध्यान ही नहीं रहता।

जाग्रत् प्रज्ञा मण्डलों के लिए प्रगतिशील विचारों के प्राणवान कार्यकर्त्ता चाहिए। प्रज्ञा मण्डल के सदस्यों में परस्पर सामंजस्य की भावना का विकास होना चाहिए। हाथ की पाँचों अंगुलियाँ एक-सी कहाँ होती हैं? लेकिन जब अपनी विविधताओं के बावजूद वे इकट्ठी हो जाती हैं तो ताकतवर मुट्ठी बन जाती है। खेल में किसी भी टीम के सभी सदस्यों की प्रतिभा एक जैसी कहाँ होती है? लेकिन जो कप्तान अपनी टीम के सदस्यों की विशेषता पहचानता है और उसका सही ढंग से उपयोग करना जानता है, वही विजयी होता है।

प्रज्ञा मण्डल के सदस्यों को बड़े उद्देश्यों के लिए समर्पित होना चाहिए। जब बड़े उद्देश्यों के लिए कार्य किया जाता है, तब छोटे-छोटे मतभेद स्वतः ही समाप्त होते जाते हैं। यज्ञभाव के साथ स्वयं कष्ट सहकर भी प्रज्ञा मण्डल के सदस्य अपने साथियों की इच्छाओं का ध्यान रखने की मानसिकता विकसित कर लें तो परस्पर प्रेम और सामंजस्य स्वतः ही बढ़ता जायेगा। **साधनों पर आश्रित न रहें, अपनी सामर्थ्य को पहचानें। यह विश्वास रखें कि हर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के बल पर ही इतना कुछ कर सकता है जिसे अविश्वसनीय कहा जा सके।**

आज समाज में धार्मिक प्रवृत्तियों की कमी नहीं है, लेकिन हमारा उद्देश्य है समाज में व्यापक बदलाव, लोगों की आस्थाओं में आमूलचूल परिवर्तन, भौतिकतावादी मानसिकता की अंधी दौड़ पर अध्यात्म का अंकुश लगाना, लोगों को 'सादा जीवन-उच्च विचार' की रीति-नीति को अपनाने के लिए प्रेरित करना। हमें समाज में छाई अवांछनीयता को दूर करना है। अंधविश्वासों, मूढ़ मान्यताओं और कुरीतियों से समाज को बाहर निकालकर समाज में 'सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को प्रतिष्ठित करना है। प्रज्ञा मण्डल की पूजापाठ, हवन, सत्संग, संकीर्तन जैसी गतिविधियाँ परस्पर संगठित रहने और अपने व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने का माध्यम मात्र हैं, लक्ष्य तो समाज का नवनिर्माण ही है। आवश्यकता है, प्राणवान कार्यकर्त्ता इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए अपने-अपने प्रज्ञा मण्डलों का नेतृत्व सँभालें, उन्हें युगऋषि की आकांक्षा के अनुरूप सक्रिय करें और हर एक-दो किलोमीटर के क्षेत्र में हमारे प्रज्ञा मण्डल सक्रिय हों, ऐसे प्रयास करें।

यह जन्मशताब्दी वर्ष की वेला है। इन दिनों ज्योति कलश यात्राओं के माध्यम से युगचेतना का प्रेरणा-प्रकाश हर व्यक्ति तक पहुँचाया जा रहा है। यह प्रकाश उनके जीवन में स्थायी परिवर्तन का आधार बने, यह तभी संभव है जब हमारे मिशन की बुनियादी इकाई प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल, स्वाध्याय मण्डल सही मायनों में अपने लक्ष्य को पहचानें और समाज को बदलने के संकल्प के साथ सक्रिय हो जायें।

प्रज्ञा अभियान से नई क्रान्ति का उदय

कोई भी कार्य उसकी सफलता के आधार पर, उससे मिलने वाली ऊर्जा और उत्साह से आगे बढ़ता है। जन्मशताब्दी वर्ष की माँग और अपनी गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना के प्रभाव से इन दिनों इस दृष्टि से पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के माध्यम से मण्डलों को सक्रिय एवं ऊर्जावान बनाने की दिशा में एक नई क्रान्ति का उदय हुआ है। परम पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से मण्डलों का निर्माण सज्जनों को संगठित करने, अनीति (कुरीति, कुविचारों) से लोहा लेने तथा नवसृजन की गतिविधियों को गति देने के लिए ही तो हुआ है। परम पूज्य गुरुदेव का आह्वान है, **''मेरे विचार क्रान्ति के बीज हैं, इन्हें घर-घर पहुँचा दो।** ये विचार जहाँ-जहाँ जायेंगे, वहाँ सतयुगी परिस्थितियों का निर्माण स्वतः ही होता चला जायेगा।'' उन्होंने प्रत्येक आस्थावान से श्रवण कुमार बनकर अखण्ड ज्योति, ज्ञानरथ, झोला पुस्तकालय आदि के माध्यम से पूरे समाज में सद्विचारों के बीज बिखेर देने का आह्वान किया है।

अब पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के माध्यम से प्रज्ञा मण्डल/महिला मण्डल/युवा मण्डलों में एक नए प्रकार की सक्रियता जन्म ले रही है। राजस्थान से प्रज्ञा अभियान की एक अभिनव क्रान्ति का उद्गम भी राजस्थान से ही हो रहा है, जहाँ जयपुर, अलवर, जोधपुर, कोटा, भीलवाड़ा आदि जिलों में मातृशक्ति विशेष रूप से सक्रिय हुई और अपने जिले के हर मण्डल/शाखा को 25 से 100 तक प्रज्ञा अभियान मँगवाने के लिए प्रेरित किया है। जो जिले सक्रिय हुए हैं, वे अब अपने पूरे उपजोन को इस अभियान से जोड़ रहे हैं।

अत्यंत अनुकरणीय उत्सावर्धक पहल

प्रायः सभी ने प्रभात फेरियाँ, संकीर्तन मण्डलियाँ देखी होंगी। अपने मिशन में नशामुक्ति रैलियों की बड़ी लोकप्रिय परम्परा है। इसी तर्ज पर अलवर की राजगढ़ शाखा ने **प्रज्ञा अभियान की शोभायात्रा** निकालना आरंभ कर दिया है। मण्डल के सभी सदस्य हर पंद्रह दिन में मिलकर घर-घर संपर्क अभियान पर निकलते हैं, हर दरवाजे पर दस्तक देते हैं और उन्हें अपनी ओर से निःशुल्क प्रज्ञा अभियान देते हैं। घर-घर संपर्क का यह अभियान परिजनों में भरपूर उत्साह का संचार कर रहा है। समाचार लिखे जाने तक, एक माह के भीतर ही राजगढ़ तहसील के 1300 लोगों ने प्रज्ञा अभियान की सदस्यता ग्रहण की।

प्रज्ञा मण्डल/शाखा सदस्यों के लिए यह बहुत ही ऊर्जादायी कार्यक्रम सिद्ध हुआ है। समाज की प्रतिक्रियाएँ बड़ी उत्साहवर्धक हैं। **हर गली-मोहल्ले में गायत्री मंत्र गूँज उठा है।** जैसे भगवान कृष्ण ने बृजवासियों को इंद्र के कोप से बचाने के लिए ग्वाल-बालों से गोवर्धन उठवाया था, उसी प्रकार गायत्री परिवार के उत्साही कार्यकर्त्ता घर-घर जाकर युग संकट से स्वयं की रक्षा के लिए **'युगशक्ति गायत्री का दिव्य कवच'** धारण करने की प्रेरणा दे रहे हैं। लोगों को नियमित उपासना, साधना के साथ मिशन की विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित कर रहे हैं। जो परिजन अकेले लोगों में संपर्क करने में संकोच अनुभव किया करते थे, वे अब सब मिलकर ज्ञानयज्ञ की ज्योति जलाने घर-घर जा रहे हैं और अकूत उत्साह की अनुभूति कर रहे हैं।

वर्तमान युग का देवासुर संग्राम हर घर में, हर व्यक्ति के मन में लड़ा जा रहा है। नशे ने घर-घर में पाँव पसारे हैं। भौतिकता की काली छाया, भोगवादी मानसिकता, फैशन-फिजूलखर्ची, झूठी शान की अनगढ़ दौड़, उद्दण्ड और कुसंस्कारी होते बच्चे, क्लेश, अशांति, असंतोष घर-घर की समस्या है। **इस असुरता से बचाने की सामर्थ्य युगशक्ति गायत्री में ही विद्यमान है।** प्रज्ञा अभियान के माध्यम से यह युगशक्ति गायत्री घर-घर पहुँच रही है। प्रज्ञा मण्डल पुनर्जीवित हो रहे हैं। **जाग्रत् आत्माएँ आगे आयें, इस अभियान को निरंतर आगे बढ़ायें और हर परिजन में नई चेतना, नया विश्वास जगायें, गुरुसत्ता से यही भावभरी प्रार्थना है।**

लोकमंगल के लिए जागी संवेदनाओं की सफल, सुखद परिणतियाँ

हनुमानपुरा : एक आदर्श युग निर्माणी गाँव

हर घर में हुई है देव स्थापना | **हर घर में होता है बलिवैश्व यज्ञ** | **हर वर्ष गाँव में लगाए जाते हैं 300 फलदार वृक्ष** | **हर वर्ष आयोजित होते हैं बच्चों के समर कैम्प**

खाटू श्यामजी, सीकर। राजस्थान

राजस्थान की सुविख्यात तीर्थ नगरी खाटू श्यामजी के समीप स्थित है गाँव हनुमानपुरा। गाँव में भले ही केवल 110 घर हैं, पर युग निर्माण मिशन की दृष्टि से यह एक आदर्श ग्राम बन चुका है। यह ऐसा गाँव है, जिसके प्रत्येक घर में देव स्थापना हुई है, हर घर में प्रतिदिन बलिवैश्व यज्ञ और सुंदरकांड का पाठ होता है। गाँव का कोई ऐसा घर शेष नहीं है, जिसमें यज्ञ या दीपयज्ञ न हुआ हो।

हनुमानपुरा में व्यसन मुक्ति, राष्ट्र प्रेम, सुसंस्कारिता और भक्ति प्रेरणा के विषयों पर सांस्कृतिक नृत्य-नाटिकाएँ व नुक्कड़ नाटक होते रहते हैं। गाँव में ग्रावासियों के जन्मदिन, विवाह दिवस, पुंसवन, अन्नप्राशन जैसे संस्कार नियमित रूप से मनाते हैं। गाँव में पू. गुरुदेव की प्रज्ञा पुराण कथा और श्री सत्यनारायण व्रत कथा भी बहुत लोकप्रिय है।

गाँव में एक झोला पुस्तकालय है और दो घरों में पुस्तकालय चल रहे हैं। गाँव के आँगन व द्वार मांडणों से सजे होते हैं। प्रत्येक मंगलवार ग्राम के युवा हनुमान मंदिर में कीर्तन करते हैं। गाँव के कई परिवार युग निर्माण योजना और अखंड ज्योति पत्रिका के नियमित पाठक हैं। ग्राम में प्रतिवर्ष 300 फलदार पौधों का रोपण किया जाता है।

परिवर्तन की सूत्रधार हैं डॉ. प्रज्ञा पारीक

गाँव के इस कायाकल्प की सूत्रधार हैं डॉ. प्रज्ञा पारीक। खाटू श्यामजी में रहने वाली डॉ. प्रज्ञा पारीक ने अपने सतत प्रयास, मार्गदर्शन और समर्पण से इस छोटे-से गाँव को आदर्श ग्राम बनाने में विशेष भूमिका निभाई है। उनके अथक पुरुषार्थ से हनुमानपुरा का हर घर, हर गली गायत्री मंत्र और युग निर्माण के नारों से गूँज रहा है।

गूँजते हैं नन्हें युग निर्माणियों के स्वर

हनुमानपुरा में वर्ष 2000 से बाल संस्कारशाला का आयोजन ग्रीष्मावकाश में 21 से 30 दिनों तक निरंतर किया जाता रहा है। वर्ष 2016 से नारी जागरण एवं कन्या कौशल शिविर भी नियमित रूप से संचालित हो रहे हैं। जिनके प्रभाव से यह गाँव आज नन्हें युग निर्माणीयों के प्रखर उत्साह, बेटियों की साधना व मंत्रोच्चारण से गूँजता है।

हनुमानपुरा सही मायनों में युग निर्माण का सजीव उदाहरण बन चुका है, जहाँ की माताएँ प्रत्येक कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

जरूरतमंदों की सेवा में समर्पित है चेतनाग्राम

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया

जयपुर। राजस्थान

वाटिका स्थित चेतनाग्राम संस्था द्वारा 15 जून को निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का संचालन एपेक्स हॉस्पिटल के सहयोग से हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने भाग लेकर स्वास्थ्य जाँच एवं उपचार की निःशुल्क सुविधा प्राप्त की।

कार्यक्रम का नेतृत्व संस्था की चेयरपर्सन श्रीमती विभा अग्रवाल ने किया। संस्था के प्रमुख सदस्य विजय मीणा, अरुणा अग्रवाल, शकुंतला, रणवीर सिंह चौधरी, डॉ. प्रशांत एवं अन्य गणमान्यजन शिविर में उपस्थित रहे। ग्राम सरपंच गीता चौधरी ने नियमित रूप से ऐसे शिविरों के आयोजन का अनुरोध करते किया। उन्होंने जरूरमंदों को स्वावलम्बी, संस्कारवान एवं आत्मनिर्भर बना रही चेतनाग्राम संस्था की सेवाओं को सामाजिक विकास का एक अनूठा उदाहरण बताया।

चेतनाग्राम की चेयरपर्सन श्रीमती विभा अग्रवाल गायत्री परिवार जयपुर की अत्यंत कर्मठ, निष्ठावान कार्यकर्त्ता हैं। उनकी संस्था जरूरतमंदों को स्वावलम्बी, सेवाभावी, संस्कारवान बनाने की प्रशिक्षण परक योजनाएँ चला रही है।

शिविर में सेवाएँ देने वाली टीम का सम्मान करते आयोजकगण एवं चेतनाग्राम की जूनियर विंग के बच्चे

हाल ही में स्थापित चेतनाग्राम की जूनियर विंग (जिसके सदस्यों की औसत आयु मात्र 14 वर्ष है) ने पूरे शिविर की व्यवस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभाई। जय अग्रवाल, दक्ष अग्रवाल, आरव अग्रवाल और अतिवीर धोका ने जूनियर विंग का नेतृत्व किया।

एक नई क्रान्ति का शुभारंभ

प्रज्ञा अभियान का राजस्थान संस्करण

लक्ष्य : हर प्रज्ञा मण्डल 25 और हर जिला 1000+ सदस्य बनायें

जन्मशताब्दी वर्ष-2026 की पूर्व वेला में युगचेतना विस्तार के लिए अनेक क्रान्तिकारी प्रयोग हुए हैं। ज्योति कलश यात्राएँ, जन्मशताब्दी साधना अभियान, युग निर्माण सत्संकल्पों के पाठ की परंपरा को प्रोत्साहन जैसे विशेष कार्यक्रमों की शृंखला में एक कार्यक्रम पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के प्रांतीय संस्करणों का शुभारंभ भी है। प्रज्ञा अभियान के माध्यम से हमारा जनसंपर्क अभियान निरंतर बढ़ता रहे, परम पूज्य गुरुदेव के विचार और संस्कारों को खाद-पानी देने का, जन-जन के मन में जाग्रत् होने वाली श्रद्धा, संवेदनाओं के पोषण का कार्य गतिशील होता रहे, यही इस नई पहल का लक्ष्य है।

इस वर्ष के आरंभ में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने पाक्षिक के प्रांतीय संस्करणों के आरंभ किये जाने का आह्वान किया था। इसका शुभारंभ बसंत पंचमी को श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने **प्रज्ञा अभियान के मध्य प्रदेश संस्करण** के विमोचन के साथ किया। मध्य प्रदेश संस्करण आरंभ होने के साथ ही राजस्थान, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, महाराष्ट्र आदि हर राज्य में प्रज्ञा अभियान को घर-घर पहुँचाने का अभियान बड़ी तेजी से गतिशील हुआ है। प्रायः हर प्रान्त की अपेक्षा है कि उनके क्षेत्र की गतिविधियों को प्रज्ञा अभियान के माध्यम से अधिक से अधिक प्रोत्साहन मिले। यह विशेष संस्करण के माध्यम से ही संभव है, जिसके लिए सभी प्रयास भी कर रहे हैं।

राजस्थान के केन्द्रीय एवं प्रांतीय संगठन के साथ कई जिलों के प्राणवान कार्यकर्त्ताओं ने इसके लिए अथक प्रयास किया और मात्र 2-3 माह में ही पाक्षिक की सदस्य संख्या कई गुना बढ़ा ली, जिसके परिणामस्वरूप **गुरुपूर्णिमा से 'राजस्थान संस्करण' का प्रकाशन का शुभारंभ हो रहा है।** इसके लिए प्रांतीय स्तर पर **'प्रज्ञा डेस्क' का गठन किया गया है,** जो समाचार संकलन, संपादन जैसे कार्यों के साथ हर मण्डल 25 प्रज्ञा अभियान मँगाये तथा हर जिले में पाक्षिक की सदस्यता 1000 से अधिक पहुँचे, इसके लिए कार्य करेगी।

राजस्थान के प्रांतीय संगठन के यह प्रयास प्रज्ञा अभियान के माध्यम से अपने मिशन के प्रत्येक आन्दोलन को गति देते हुए परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की आकांक्षा तथा युग निर्माणी संकल्पों को पूरा करेंगे, ऐसा प्रबल विश्वास है।

अन्य प्रान्तों में भी इसी प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं। उनकी उत्तरोत्तर सफलता के लिए पावन गुरुसत्ता से भावभरी प्रार्थना।

निवेदक : संपादक मण्डल

पंचकुंडीय यज्ञ में बलिवैश्व यज्ञ का प्रशिक्षण दिया

नगर के सुप्रसिद्ध गोविंद देवजी के मंदिर में हुआ आयोजन

जयपुर। राजस्थान

नगर के सुप्रसिद्ध गोविंद देवजी मंदिर में आषाढ़ कृष्ण एकादशी, रविवार-22 जून को प्रातः पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ में देव संस्कृति की सनातन दैनिक यज्ञ परम्परा 'बलिवैश्व देवयज्ञ' का प्रदर्शन करते हुए सभी याजकों को इसे दैनंदिन जीवन में समाविष्ट करने की प्रेरणा दी गई।

गायत्री परिवार राजस्थान के प्रभारी ओमप्रकाश अग्रवाल ने बलिवैश्व देवयज्ञ को भारतीय संस्कृति की अत्यंत महत्त्वपूर्ण परंपरा बताया। उन्होंने कहा कि यह अन्न को संस्कारित कर उसे ईश्वर के प्रसाद के रूप में परिणत करने की परम्परा है। जिस घर में बलिवैश्व यज्ञ होता है, उस घर में सुख, शांति, समृद्धि एवं संस्कार स्वतः स्थापित हो जाते हैं।

पंच कुण्डीय यज्ञ में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। उन्हें आधुनिक जीवनशैली में बलिवैश्व यज्ञ की परम्परा को पुनर्जीवित करने की विधि का जीवंत प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें एक तांबे के पात्र को गैस के जलते चूल्हे पर रखकर विशेष मंत्रों के साथ अग्नि देवता को घर में निर्मित भोजन का भोग लगाया जाता है।

जन्मशताब्दी वर्ष में नारी सशक्तीकरण हेतु कार्यक्रम

ज्ञानेश्वरी जी की स्मृति में ऑनलाइन युग संगीत गायन प्रतियोगिता सम्पन्न

जोधपुर। राजस्थान

परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी एवं स्व. ज्ञानेश्वरी की पुण्यस्मृति में गायत्री परिवार महिला मंडल कुड़ी, जोधपुर द्वारा ऑनलाइन युग संगीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि स्व. ज्ञानेश्वरी बचपन से ही तबला वादन और युगगायन में निपुण थीं। उन्होंने जीवन भर गुरुदेव के गीतों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया।

प्रतियोगिता में 45 बहिनों ने लेते हुए प्रेरणादायक युग गीतों की सुंदर प्रस्तुतियाँ दीं। 'बदलो अपनी चाल', 'हे हंस वाहिनी माँ', 'कर्मों के फल से ना बचोगे', 'चंदन है इस देश की माटी' जैसे भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किए गए।

कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन गायत्री शक्तिपीठ की ट्रस्टी बसंती चौहान के मार्गदर्शन में हुआ। निर्णायक मंडल में युगगायक मयंक चौहान एवं चंद्रकला सांखला शामिल रहे। आयोजकों ने बताया कि उत्कृष्ट गायन करने वाली बहनों को आगामी मंचीय आयोजनों में प्रस्तुति हेतु आमंत्रित किया जाएगा एवं पुरस्कार भी प्रदान किए जाएंगे।

भा.सं. ज्ञान परीक्षा की जिला स्तरीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी

सभी ने कम से कम 5 विद्यालयों से संपर्क करने का संकल्प लिया

जमशेदपुर। झारखण्ड : गायत्री ज्ञान मंदिर, भालूबासा में 22 जून को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ की जिला स्तरीय गोष्ठी हुई। यह गोष्ठी भासंज्ञाप के राष्ट्रीय समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री रामयश तिवारी, श्री सुधीर श्रीपाद, श्री मनीष कुमार, प्रांतीय समन्वयक श्री ताराचंद अग्रवाल एवं जिला समन्वयक श्री राजीव रंजन की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

संगोष्ठी में केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने परीक्षा आयोजन की रूपरेखा पर विस्तृत विचार साझा किए। श्री रामयश तिवारी जी ने कहा कि हम केवल परीक्षा नहीं कराते, बल्कि एक महामानव गढ़ने का अभियान चलाते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति से नई पीढ़ी का परिचय आवश्यक है।

कार्यक्रम का संचालन युवा प्रकोष्ठ के श्री शंभुनाथ दुबे ने किया। सभी प्रतिभागियों ने कम से कम 5 विद्यालयों से संपर्क करने का संकल्प लिया।

अंतरराष्ट्रीय रक्तदाता दिवस पर जागरूकता संगोष्ठी

अलवर। राजस्थान : अंतरराष्ट्रीय रक्तदाता दिवस-14 जून को दिव्य भारत युवा संघ एवं गायत्री परिवार अलवर के संयुक्त तत्त्वावधान में गायत्री शक्तिपीठ अलवर में जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता गायत्री परिवार ट्रस्ट, करौली कुण्ड अलवर की मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी एवं सेठ मक्खनलाल महावर चैरिटेबल ब्लड बैंक की सचिव, डॉ. सरोज गुप्ता थीं। उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति रक्तदान कर तीन लोगों की जान बचा सकता है। जिला समन्वयक श्री सतीश बड़ाया ने दान के महत्व पर प्रकाश डाला, वहीं श्री मुकेश गुप्ता एवं श्री आदर्श शर्मा ने युवाओं को रक्तदान करने और शाकाहारी जीवन अपनाने के संकल्प कराए।

जिला युवा संयोजक श्री जितेंद्र यादव ने लोगों को बाजारू, डिब्बाबंद व बोतलबंद खाद्य पदार्थों से होने वाले नुकसान और शाकाहारी जीवनशैली के लाभ भी बताए। श्री राकेश सेठी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

गायत्री परिवार ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के विशाल मंचों से दिया युगऋषि का संदेश

एनसीआर में कई विशाल समारोहों का संचालन किया

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, तालकटोरा, मॉडल पार्क, पुष्प विहार एवं सीरीफोर्ट स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में हुए कार्यक्रमों से हजारों लोगों तक पहुँचा युग संदेश

दिल्ली। एनसीआर

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् दिल्ली में गायत्री परिवार के तत्त्वावधान में योग एवं स्वास्थ्य विषयक कार्यक्रम आयोजित किया गया। गायत्री परिवार की ओर से योगाचार्य तरुणेंद्र एवं संतोष जी ने समारोह में उपस्थित वैज्ञानिकों व अधिकारियों को योगाभ्यास कराया और उनके लाभ भी बताये। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. आर. थेंगावेल्लू, प्रिंसिपल रिसर्च साइंटिस्ट डॉ. सुमित्रा अरोड़ा सहित लगभग 50-60 अधिकारियों ने सहभागिता की।

गायत्री परिवार ने दिल्ली-एनसीआर के प्रमुख केंद्रों–तालकटोरा, मॉडल पार्क, पुष्प विहार एवं सीरीफोर्ट स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रमों का संचालन किया। इनके माध्यम से लगभग 2,400 योग साधकों को परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये गए जीवन योग की प्रेरणा दी गई। कार्यक्रमों

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों द्वारा सीरीफोर्ट स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का संचालन

का संचालन श्री योगेश शर्मा (गायत्री चेतना केंद्र, नोएडा) के स्नेहिल मार्गदर्शन में हुआ। समन्वयकों में श्री संदीप, श्री तरुणेंद्र, श्री नरेश जायसवाल एवं श्रीमती अनुराधा प्रमुख रहे। नोएडा, ग्रेटर नोएडा, फरीदाबाद, गुडगाँव सहित दिल्ली के सभी जिलों की टीमों ने उत्साह सहित भागीदारी की एवं अपने अनुशासन से अधिकारियों ही नहीं, जनता पर भी अमिट छाप छोड़ी।

मॉडल पार्क के कार्यक्रम में संगम विहार की नवनिर्वाचित विधायक श्रीमती चंदन चौधरी मुख्य अतिथि थीं। उन्हें मंत्र चादर व ज्ञान प्रसाद भेंट कर सम्मानित किया गया। साथ ही 30 संगठनों के प्रतिनिधियों को भी ज्ञान प्रसाद प्रदान किया गया। सभी केंद्रों पर युग साहित्य का वितरण किया गया।

दिल्ली में आयोजित कार्यक्रमों में गायत्री परिवार की अनुशासित एवं प्रेरणादायक उपस्थिति ने जनमानस पर गहरी छाप छोड़ी।

कई गाँवों में हुए स्वास्थ्य जागरूकता के सफल प्रयोग

सहारनपुर। उत्तर प्रदेश

युवा प्रकोष्ठ सहारनपुर द्वारा 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जनपद के विभिन्न स्थलों पर योग कार्यक्रम आयोजित किए गए। ग्राम बिड़वी, झबीरन, गंगोह, चौरी मंडी सहित पाँच स्थानों पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय से प्रशिक्षित युवाओं ने योग सत्रों का सफल संचालन किया, जिसमें सैकड़ों परिजनों और युवाओं ने भाग लिया। इन आयोजनों को स्थानीय परिजनों ने अत्यंत सराहनीय प्रयास बताया, जिनमें उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की बहुमूल्य प्रेरणा मिली।

कार्यक्रम में ताड़ासन, धनुरासन, वृक्षासन, मंडूकासन एवं प्रज्ञा योग सहित विविध प्राणायामों का अभ्यास कराया गया। योगाचार्यों ने योग को वर्तमान जीवन की अनिवार्य

आवश्यकता बताया। उन्होंने कहा कि योग स्वस्थ जीवनशैली, शुद्ध आहार, सकारात्मक चिंतन और श्रेष्ठ कर्मों की प्रेरणा देता है।

पुलिसकर्मियों के लिए नियमित योग प्रशिक्षण आरंभ

जहानाबाद। बिहार

प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ, जहानाबाद द्वारा इन दिनों पुलिस लाइन जहानाबाद में प्रशिक्षणरत पुलिसकर्मियों के लिए योग एवं ध्यान की नियमित कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। यह पहल पुलिस अधीक्षक महोदय ने पुलिसकर्मियों के उत्तम शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन एवं आंतरिक शांति को बढ़ावा देने के लिए की है।

प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ के रंगेश कुमार, कौशल कुमार, श्यामनारायण कुमार, शिशुपाल कुमार एवं श्रीराम ने शिविर में भाग ले रहे सैकड़ों बंदियों को विविध आसन, प्राणायाम, ध्यान का अभ्यास कराया। उन्होंने बताया कि नियमित योग एवं ध्यान से जीवन में ऊर्जा, सकारात्मकता और रोग-प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है।

पुलिसकर्मियों ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने दैनंदिन जीवन में आसन, प्राणायाम आदि को शामिल करने का आश्वासन भी दिया। प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ ने बताया कि 13 जून से आरंभ हुआ योगाभ्यास का यह कार्यक्रम लगातार चलता रहेगा, ताकि पुलिस बल न केवल शारीरिक रूप से सशक्त हो, बल्कि मानसिक रूप से भी संतुलित एवं सजग बना रहे।

टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल में प्रज्ञा योग साधना

मुंबई। महाराष्ट्र

दिया, मुम्बई द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल, मुंबई के नर्सिंग एवं पेरामेडिकल स्टाफ के

लिए प्रज्ञा योग साधना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सूक्ष्म व्यायाम, प्रज्ञा योग व्यायाम, प्राणायाम, नाद योग और शवासन के माध्यम से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक संतुलन को बढ़ाने का प्रयास रहा। कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने योग की गहराई को आत्मसात किया और दैनिक जीवन में तनाव प्रबंधन व आंतरिक शांति प्राप्त करने के लिए इसे अपनाने का संकल्प लिया।

सभी प्रतिभागियों को जीवन साधना के प्रेरक सद्वाक्य और प्रज्ञा योग साधना पुस्तक भी भेंट की गई। डॉ. सन्दीप सवकारे, डॉ. विनीत सामंत, डॉ. नवीन चतुर्वेदी सहित हॉस्पिटल प्रबंधन ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि प्रज्ञा योग साधना से स्टाफ में तनाव कम हुआ है और कार्यक्षमता में वृद्धि हुई है।

नियमित योगाभ्यासियों द्वारा आयोजित आकर्षक समारोह

नगर में चलाए जा रहे हैं चार योग केन्द्र

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश

11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर युगशक्ति गायत्री चेतना केन्द्र मुरादाबाद द्वारा एवर ग्रीन कम्पाउण्ड, सिविल लाइन्स में प्रतिष्ठित गणमान्यों की उपस्थिति में एक शानदार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. भगतराम राणा नेत्र रोग विशेषज्ञ, डॉ. दत्ता, डॉ. जितेन्द्र कुमार आदि उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम को युगशक्ति गायत्री चेतना केन्द्र के व्यवस्था मण्डल में प्रमुख भूमिका निभा रहे श्री एल.के. त्यागी, श्रीमती शीला त्यागी, श्री एस.एन. मिश्रा, डॉ. लवलेश, श्री हरीश वर्मा, श्रीमती संतोष नारंग, श्री कपिल नारंग, श्रीमती शैली पारिख, डॉ. उपमा अग्रवाल, डॉ. अनिल शर्मा, डॉ. ऋतु शर्मा, श्री सुशील मेहरोत्रा आदि की मुख्य उपस्थिति में मुरादाबाद

में नियमित रूप से चार योग केन्द्रों का संचालन कर रही योग साधिकाओं ने किया।

सभी योग साधकों एवं प्रशिक्षकों ने योग की मनोभूमि के अनुरूप एक जैसी श्वेत वेशभूषा में भाग लिया। अंतरराष्ट्रीय दिवस के मानकों के अनुरूप आसन, ध्यान, प्राणायाम के अलावा प्रज्ञायोग का विशेष अभ्यास कराया गया। श्रीमती अर्चना शर्मा एवं साधना अग्रवाल द्वारा योग नृत्य की प्रस्तुति, कार्यक्रम का विशेष आकर्षण थी।

वरिष्ठ नागरिकों की भागीदारी ने गरिमा बढ़ायी

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर यू.पी. कॉलेज प्रज्ञा मंडल एवं महिला मंडल द्वारा उदय प्रताप कॉलेज के प्राचीन छात्र भवन में योग एवं प्राणायाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गायत्री परिवार वाराणसी के वरिष्ठ मार्गदर्शक डॉ. विंध्याचल सिंह जी की गरिमामयी उपस्थिति में अनेक वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति ने समाज को अत्यंत सकारात्मक एवं प्रभावशाली संदेश दिया। बुजुर्ग, महिला मण्डल एवं युवा मण्डल के सदस्यों ने मिलकर आसन, प्राणायाम का अभ्यास किया।

वाराणसी में योगाभ्यास करते गायत्री परिवार के समर्पित कार्यकर्त्तागण

शिक्षण संस्थानों में आयोजित हुए विशाल समारोह

बगोदर, गिरिडीह। झारखण्ड

21 जून, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर बगोदर स्टेडियम में गायत्री परिवार और प्रशासन के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रेरणादायक योग कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में गुरुदेव का साहित्य व योग संबंधी पैम्फ्लेट वितरित किए गए। आयोजन को सफल बनाने में गायत्री परिजनों का सराहनीय योगदान रहा।

योगाचार्य श्री संजय कुमार विभूति ने विद्यालयों में भी बच्चों को योग कराया। प्रखंड युवा संयोजक श्री रंजीत कुमार, श्री तुलसी ठाकुर आदि ने विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के लिए अथक परिश्रम कर युगचेतना के विस्तार में बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

दुर्ग। छत्तीसगढ़

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिव्य भारत युवा संघ, छत्तीसगढ़ ने शासकीय उ.मा. विद्यालय, थनोद, शासकीय उ.मा. विद्यालय, उरला (दुर्ग) तथा अपोलो ग्रुप ऑफ कॉलेजेस में योग दिवस के कार्यक्रमों का संचालन किया। इन कार्यक्रमों में सैकड़ों छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, अभिभावकों एवं गणमान्य नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। योग सत्र का संचालन अनुभवी प्रशिक्षकों-डॉ. पी.एल. साव, डॉ. योगेन्द्र कुमार, श्रीमती अनीता साव, एवं इंजीनियर युगल किशोर द्वारा किया गया। कार्यक्रमों के अंत में स्वास्थ्य और संस्कारों से संबंधित प्रेरणात्मक पुस्तिकाएँ प्रतिभागियों को प्रदान की गईं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर बाँये बगोदर और दायें दुर्ग के विद्यालयों में गायत्री परिवार द्वारा संचालित किए गए कार्यक्रम

जिले के हर प्रज्ञा संस्थान में मनाया गया योग दिवस

धमतरी। छत्तीसगढ़

21 जून को धमतरी जिले के पाँचों विकासखंड-धमतरी, कुरुद, मगरलोड, नगरी और भखारा के प्रज्ञापीठों, शक्तिपीठों, मंडलों और विद्यालयों में योग एवं प्राणायाम सत्रों का आयोजन किया गया। प्रत्येक कार्यक्रम में परिजनों और स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। श्री दिलीप नाग ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में सभी को नियमित रूप से योग करने तथा स्वस्थ, निरोगी जीवन जीने की प्रेरणा दी।

नवापारा, रायपुर। छत्तीसगढ़

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ नवापारा में आयोजित समारोह का संचालन श्रीमती कमल कस्तूरी साहू ने किया। उन्होंने उपस्थित योगाभ्यासियों को सरल योगासन, सूक्ष्म व्यायाम, सूर्य नमस्कार, प्रज्ञा योग एवं विविध प्राणायाम जैसे भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम-विलोम, त्रिबंध, उज्जयी, भ्रामरी एवं ओंकार नाद का अभ्यास कराया। उन्होंने कहा कि नियमित योगाभ्यास से हम स्वस्थ शरीर, शांत मन और सकारात्मक जीवन की ओर बढ़ते जाते हैं। उन्होंने लोगों को स्वस्थ शरीर के लिए योग की ही तरह स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए 'सहयोग' पर भी अपने विचार साझा किये।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में परिजनों ने सहभागिता की। सभी ने **'हम सब सुखी रहें, निरोग रहें'** की भावना के साथ योग दिवस की एक-दूसरे को बधाई दी एवं योग को दैनिक जीवन में अपनाने का संकल्प लिया।

अग्नि सोने को परखती है, आपत्ति वीर पुरुष को।

उत्तर प्रदेश में ज्योति कलश रथयात्राओं के स्वागत में भव्य समारोह

आँवलखेड़ा जोन के गाँव-गाँव में उमड़ रहा है जनसैलाब

आगरा। उत्तर प्रदेश

शान्तिकुञ्ज से पहुँची ज्योति कलश रथ यात्रा का आँवलखेड़ा जोन और आगरा नगर क्षेत्र में भव्य स्वागत हुआ। जोन समन्वयक श्री जगदीश सिंह कुशवाह ने बताया कि रथ यात्रा ने आँवलखेड़ा ब्लॉक के 108 गाँवों में भ्रमण कर घर-घर युग संदेश, नशामुक्ति, व्यसनमुक्ति, स्वच्छता और सद्भाव का प्रचार किया। इन गाँवों में स्कूल, पंचायत भवन, मंदिरों में रुककर जनसमुदाय को विचार क्रांति, नशामुक्ति, व्यसनमुक्ति, स्वच्छता व समाज में सद्भाव स्थापित करने का संदेश दिया।

आगरा जिले के गाँवों की गलियों से गुजरता ज्योति कलश रथ

8 जून को यह रथ यात्रा बमरौली कटारा पहुँची, जहाँ सहस्त्रधारा, पंच कुंडीय यज्ञ और कलश यात्रा के साथ क्षेत्रीय परिजनों ने भावपूर्ण स्वागत किया।

अगरपुर गाँव में वशिष्ठ संस्कृति मंडल के नेतृत्व में ग्रामवासियों ने ढोल-नगाड़ों, पुष्पवर्षा और जयघोषों के साथ ज्योति कलश का अभिनंदन किया। बहिनों ने सामूहिक शंखनाद और आरती के साथ ज्योति कलश का पूजन किया। युवा कार्यकर्त्ता राघवेन्द्र शर्मा ने सभी के भोजन की व्यवस्था की। उल्लेखनीय है कि अगरपुर में प्रज्ञा अभियान की नियमित 25 प्रतियाँ वितरित होती हैं एवं मासिक यज्ञ भी किया जाता है।

आगरा नगर में महादेवी नगर, टेढ़ी बगिया, अंजनी विहार, कालिंदी विहार, शिवानी वाटिका आदि में रथ यात्रा का भव्य स्वागत हुआ। यात्रा का नेतृत्व सुरेश चन्द्र यादव, विजयपाल बघेल और जिला समन्वयकों ने किया।

जनेश्वर मिश्र पार्क में भव्य स्वागत समारोह

लखनऊ। उत्तर प्रदेश : जन्मशताब्दी ज्योति कलश रथ यात्रा जब जनेश्वर मिश्र पार्क, गेट नंबर 1 पर पहुँची तो दिव्य ज्योति कलश के दर्शन कर वहाँ उपस्थित सैकड़ों परिजन भाव-विभोर हो उठे। मंगल कलश का पूजन, वैदिक मंत्रोच्चार एवं सामूहिक शंखनाद के साथ यात्रा का स्वागत हुआ। बहिनों द्वारा सामूहिक शंखध्वनि के साथ यात्रा गायत्री शक्तिपीठ गोमतीनगर पहुँची, जहाँ ज्योति कलश की आरती कर अगवानी की गई।

गायत्री शक्तिपीठ में भव्य स्वागत समारोह आयोजित हुआ, जिसमें कैबिनेट मंत्री श्री जयवीर सिंह, खाद्य एवं रसद आपूर्ति मंत्री श्री सतीश चंद्र, क्षेत्रीय विधायक श्री राकेश प्रताप सिंह सहित अनेक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, उपजोन समन्वयक एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे। श्री देशबंधु तिवारी ने यात्रा के उद्देश्य का विस्तार से उल्लेख किया।

भारतीय संस्कृति और नशामुक्ति का संदेश दे रही है यात्रा

नजीबाबाद, बिजनौर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ नजीबाबाद में आयोजित विशाल समारोह के साथ नजीबाबाद उपजोन में ज्योति शक्ति कलश रथ यात्रा का भव्य शुभारंभ हुआ। समन्वयक श्री डी.पी. सिंह व स्थानीय समन्वयक डॉ. दीपक कुमार ने रथ को रवाना किया। तत्पश्चात् कलश यात्रा में पीत वस्त्रधारी सैकड़ों महिलाओं ने सिर पर कलश धारण कर भारत माता की जय, नशामुक्ति और सामाजिक समरसता के उद्घोष के साथ नगर में भ्रमण किया।

रथ में टोली का नेतृत्व श्री रमा शंकर पटेल कर रहे हैं। नजीबाबाद जोन में यह ज्योति कलश यात्रा सहारनपुर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, बागपत, शामली, मुरादाबाद, बरेली, शाहजहाँपुर, गाजियाबाद सहित 16 जनपदों में पहुँचेगी। यात्रा में मनीष कुमार, भाव सिंह, प्रीतम सिंह, उदय सिंह चौहान सहित कई साधक शामिल रहे।

चाँदपुर, बिजनौर। उत्तर प्रदेश

ज्योति कलश रथ के दिव्य सान्निध्य में 23 जून को बिजनौर की चाँदपुर तहसील एवं विकासखंड जलीलपुर क्षेत्र में गायत्री यज्ञ हुआ। इसके पश्चात परिजनों ने रामलीला मैदान में रथ का भव्य स्वागत, पूजन, अभिनंदन किया। 23 जून तक भ्रमण के समय 375 से अधिक स्थलों पर संपर्क किया गया तथा दीवारों पर 150 प्रेरणादायी सद्वाक्य लिखे गए। घर-घर जाकर सत्संकल्प के स्टिकर भी लगाए गए, जिससे समाज में सकारात्मकता एवं जागरूकता का संचार हुआ।

सायंकाल रामलीला मैदान में आयोजित दीपयज्ञ में लगभग 450 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। 20 दीक्षा, 25 देवस्थापना, 17 अन्य संस्कार हुए। यात्रा के अवसर पर श्री उदयसिंह चौहान, श्री विनोद चौहान, श्री समर सिंह एवं पं. सोमेश्वर दत्त समेत टोली के अन्य सदस्यों द्वारा नवीन परिजनों को अखण्ड ज्योति पत्रिका के पुराने अंक, गायत्री चालीसा एवं अन्य साहित्य भेंट किया गया।

भोलेबाबा की नगरी में गूँजा महाकाल का संदेश

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

वाराणसी में गायत्री शक्तिपीठ नगवा में ज्योति कलश रथ का प्रथम पूजन हुआ। तत्पश्चात् श्री काशी विश्वनाथ कॉरिडोर से जोन समन्वयक श्री मानसिंह ने रथ को हरी झंडी दिखाकर 13 जून से 24 जून 2025 तक वाराणसी के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण के लिए रवाना किया।

जिला समन्वयक पंडित गंगाधर उपाध्याय ने बताया कि यह यात्रा युग ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है। रथ यात्रा परिभ्रमण में रामजीत पांडेय, विद्याधर मिश्र, सुदामा यादव, डॉ. रोहित गुप्ता, जे.एस. दुबे, पूर्णिमा भारद्वाज, सरिता श्रीवास्तव, रमन कुमार श्रीवास्तव सहित अनेक कार्यकर्त्ताओं का सक्रिय योगदान रहा है।

बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए हुए कार्यक्रम

नौ दिवसीय प्रशिक्षण शिविर

पूरनपुर, पीलीभीत। उत्तर प्रदेश

माता भगवती देवी गौशाला, प्रसादपुर में दिनांक 01 जून से 09 जून 2025 तक नौ दिवसीय बाल प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इसमें बच्चों को योग व्यायाम, यज्ञ, दीप यज्ञ, जीवन मूल्यों और चारित्रिक उन्नति की प्रेरणा दी गई। बच्चों को श्रमदान और स्वच्छता का प्रशिक्षण भी दिया गया, जिससे उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित हो सके। शिविर का उद्देश्य बच्चों के चारित्रिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को सशक्त करना था, अभीष्ट लक्ष्य में शानदार सफलता मिली।

प्रशिक्षण सत्रों में श्री विनोद जी ने योग, श्री संदीप सिंह ने स्वावलंबन, श्री अनंतराम पालिया जी ने यज्ञ एवं कर्मकांड, श्री शास्त्री जी ने भाषण और संभाषण कला, श्री लालाराम मौर्य जी ने प्रज्ञा पुराण व्याख्यान और श्री राजेश शर्मा ने संगीत का प्रशिक्षण प्रदान किया।

पूरनपुर में आयोजित शिविर के भाग लेने वाले बच्चों को प्रमाण पत्र प्रदान करते गायत्री परिवार के परिजन

श्री सत्य प्रकाश शुक्ल जी ने युग निर्माण सत्संकल्प को गीता के अठारह अध्यायों का सार बताते हुए इसे जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प दिलाया।

9 जून को सम्पन्न विदाई एवं सम्मान समारोह में प्रतिभागी बच्चों को गायत्री परिवार द्वारा प्रशस्ति पत्र और मेडल देकर सम्मानित किया गया। समारोह में तहसील संयोजक श्री राम औतार कुशवाह जी ने सभी प्रशिक्षकों, अभिभावकों और बच्चों का आभार व्यक्त किया।

बाल निर्माण के लिए एनिमेटेड कहानियों का विपुल भण्डार

पुणे। महाराष्ट्र

बच्चों के नैतिक उत्थान और व्यक्तित्व विकास के लिए अनन्य भाव से समर्पित प्राणवान युवा कार्यकर्त्ता श्री राजेश टेकरीवाल द्वारा पिछले कई वर्षों से एक अद्वितीय कार्य किया जा रहा है। वे प्रतिदिन एक से दो मिनट की बाल निर्माण की एनिमेटेड कहानियों का वीडियो यू-ट्यूब पर अपलोड कर रहे हैं।

श्री राजेश टेकरीवाल की टीम द्वारा अपलोड की जा रही कहानियाँ अत्यंत रोचक हैं और परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के अनुरूप बच्चों के चरित्र का उत्थान करने वाली हैं। यह प्रकृति, पशु-पक्षी, महापुरुषों, प्रेरणाप्रद संस्मरणों पर आधारित होती हैं, जो बच्चों में आत्मबल एवं सकारात्मक सोच विकसित करती हैं और उन्हें संस्कारवान बनाती हैं।

QR कोड आधारित प्लेलिस्ट उपलब्ध है

यह एनिमेटेड कहानियाँ हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी, बोडो, ओड़िया, असमिया, कन्नड़, तमिल, मलयालम, तेलुगु, बंगाली, छत्तीसगढ़ी, कुमाऊंनी और नेपाली भाषाओं में उपलब्ध हैं। लाभार्थियों की सुविधा के लिए इनकी प्लेलिस्ट के QR कोड तैयार किये गए हैं। आवश्यकतानुसार परिजन श्री राजेश टेकरीवाल (मोबाइल 98600 62310) से संपर्क कर इन्हें प्राप्त कर सकते हैं।

श्री राजेश टेकरीवाल की टीम विद्यालयों में भी संपर्क एवं प्रेरक उद्बोधनों का क्रान्तिकारी अभियान चला रही है। इस क्रम में वे पुस्तक 'हारिये न हिम्मत' का मराठी अनुवाद 'धीर धरा' की लाखों पुस्तकें बच्चों में निःशुल्क वितरित करा चुके हैं।

भा.सं. ज्ञान परीक्षा की जिला स्तरीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी

सभी ने कम से कम 5 विद्यालयों से संपर्क करने का संकल्प लिया

जमशेदपुर। झारखण्ड : गायत्री ज्ञान मंदिर, भालूबासा में 22 जून को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ की जिला स्तरीय गोष्ठी हुई। यह गोष्ठी भासंज्ञाप के राष्ट्रीय समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री रामयश तिवारी, श्री सुधीर श्रीपाद, श्री मनीष कुमार, प्रांतीय समन्वयक श्री ताराचंद अग्रवाल एवं जिला समन्वयक श्री राजीव रंजन की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

संगोष्ठी में केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने परीक्षा आयोजन की रूपरेखा पर विस्तृत विचार साझा किए। श्री रामयश तिवारी जी ने कहा कि हम केवल परीक्षा नहीं कराते, बल्कि एक महामानव गढ़ने का अभियान चलाते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति से नई पीढ़ी का परिचय आवश्यक है।

कार्यक्रम का संचालन युवा प्रकोष्ठ के श्री शंभुनाथ दुबे ने किया। सभी प्रतिभागियों ने कम से कम 5 विद्यालयों से संपर्क करने का संकल्प लिया।

गोष्ठी को संबोधित करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री रामयश तिवारी, श्री सुधीर श्रीपाद एवं श्री मनीष कुमार

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री राम प्रसाद जोशी, कानपुर। उत्तर प्रदेश

परम पूज्य गुरुदेव के प्रति तन, मन, धन से समर्पित कानपुर के वरिष्ठतम कार्यकर्त्ता श्री राम प्रसाद जोशी अपनी 93 वर्ष की जीवन यात्रा पूर्ण कर दिनांक 26 जून 2025 को ब्रह्मलीन हो गए। उन्होंने कानपुर महानगर में एच.ए.एल. से सेवा निवृत्त होकर अपना सारा जीवन ही गुरुदेव को समर्पित कर दिया था। कानपुर महानगर में ही नहीं, बल्कि अपने जन्म स्थान गढ़वाल मंडल के जजेडी गाँव के आसपास भी उन्होंने अनेकों गावों में गायत्री यज्ञों की शृंखला चलाई एवं मिशन का प्रचार-प्रसार करते रहे।

श्रीमती बैसाखी देवी भट्ट, उत्तरकाशी। उत्तराखंड

सन् 2009 से युग निर्माण आन्दोलन के लिए पूरे मनोयोग से सक्रिय श्रीमती बैसाखी देवी भट्ट का दिनांक 11 जून 2025 को 67 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वे गाँव-गाँव में गायत्री यज्ञ, संस्कार, नारी जागरण, वृक्षारोपण, नशा उन्मूलन, घर-घर गंगाजल स्थापना जैसे विविध अभियानों को गति देती रहीं। उनकी प्रेरणा और संस्कारों के प्रभाव से उनके सुपुत्र डॉ. मुरली मनोहर भट्ट एवं चंद्रशेखर भट्ट भी मिशन के कार्यों में पूरी श्रद्धा और समर्पण भाव के साथ सक्रिय हैं।

जो प्रगति का रास्ता सच्चे मन से ढूँढ़ता है, उसे उपयुक्त अवसर मिलकर ही रहता है। - सेम्युअल स्माइल्स

दुबई में पहुँचा ज्योति कलश, छाई दिव्य आलोक के विस्तार की उमंग

इन दिनों पूरे विश्व में अखण्ड ज्योति के दिव्य आलोक और मातृसत्ता की सजल संवेदनाओं का वैश्विक विस्तार करने के लिए ज्योति कलश यात्राएँ अनेक देशों में पहुँची हैं। इसी क्रम में अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं गायत्री विद्यापीठ शिक्षण समिति, शान्तिकुञ्ज की प्रमुख आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी दिव्य ज्योति कलश लेकर दिनांक 12 जून 2025 को दो दिवसीय प्रवास पर दुबई पहुँचे। वहाँ के परिजनों में अभूतपूर्व उल्लास छा गया। दुबई एयरपोर्ट पर भव्य स्वागत के उपरांत दो दिनों में कई समारोह, संगोष्ठियों का आयोजन हुआ, हजारों लोगों तक युगचेतना का दिव्य प्रकाश पहुँचा। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री कल्पेश पटेल ने इस प्रवास में डॉ. चिन्मय जी के सहयोगी की भूमिका निभाई।

आचार्य-शिष्यों का स्नेहासिक्त मिलन समारोह

दो दिवसीय प्रवास का प्रारंभ सन मैनेजमेंट ऑफिस में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों से मुलाकात के साथ हुआ। लाइफस्टाइल योगा स्टूडियो तथा कई अन्य संस्थानों में कार्यरत योग और युगऋषि की विचारधारा को समाज में फैला रहे अनेक पूर्व विद्यार्थियों ने वैश्विक स्तर पर आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्रान्ति का नेतृत्व कर रहे अपने आचार्य का हार्दिक स्वागत किया, उनसे अत्यंत स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन, आशीर्वाद प्राप्त किया। डॉ. पण्ड्या जी ने उन सभी के समर्पण भाव की सराहना की और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।

लाइफस्टाइल योगा स्टूडियो दुबई का वह स्टूडियो है, जहाँ 100 से अधिक देशों के लोग योग सीखते हैं।

दुबई में देसंविवि का गौरव बढ़ा रहे पूर्व विद्यार्थियों के प्रति कुलपति जी के संग खिल उठे चेहरे

वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में गणमान्यों को संदेश

अगला कार्यक्रम दुबई के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर कॉम्प्लेक्स में स्थित बुर दुबई में उद्योग, प्रशासन, शिक्षा, चिकित्सा, तकनीक, न्याय, सामाजिक एवं आध्यात्मिक संगठनों सहित विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्यों एवं गायत्री परिवार के समर्पित परिजनों की संगोष्ठी का था। अरब रीजन योग काउंसिल के संयोजक चरत जी, अखिल जी एवं लीना जी भी इस संगोष्ठी में शामिल हुए। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने परम पूज्य गुरुदेव की युग निर्माण योजना और जन्मशताब्दी वर्ष 2026 के कार्यक्रमों की सारगर्भित जानकारी दी। परम पूज्य गुरुदेव के संकल्पों को पूरा करने के लिए बड़े उत्साह भरे संकल्प लिए गए।

अनेक प्रतिष्ठित संगठनों के प्रतिनिधियों से संवाद

दुबई के इंडिया क्लब में एक प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन 'मीट एण्ड ग्रीट' का आयोजन हुआ। इसमें इंडियन पीपल फोरम, राजस्थान काउंसिल एण्ड चेप्टर, फ्रेंड ऑफ इंडिया, राजस्थान बिजनेस एण्ड प्रोफेशनल ग्रुप, एक्टिविटी अकाउंट्स ऑफ इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन, विश्वकर्मा बिजनेस एण्ड प्रोफेशनल ग्रुप, धी इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंट्स ऑफ इंडिया, जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन, विश्वकर्मा बिजनेस एण्ड प्रोफेशनल ग्रुप, टैक्सेशन सोसायटी सोशल एण्ड कल्चरल जैसे अनेक व्यापारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन तथा पत्रकारिता जैसे क्षेत्रों के सैकड़ों प्रमुख प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 'जीवन आशीर्वाद या अभिशाप।' विषय से युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज का संदेश दिया, जिसने सभी को आत्मसमीक्षा कर जीवन के सदुपयोग के विषय में गहराई से सोचने पर विवश कर दिया।

सम्मेलन में जन्म शताब्दी वर्ष-2026 की योजना एवं कार्यक्रमों की विस्तार से चर्चा हुई। ज्योति कलश यात्रा के माध्यम से पूज्य गुरुदेव के दिव्य संदेश को जन-जन तक पहुँचाने देने में भावभरे सहयोग का आह्वान किया गया। इस कार्यक्रम ने दुबई में बसे भारतीय समुदाय को नई चेतना, सकारात्मक सोच और आत्मविकास की दिशा में एक नई ऊर्जा प्रदान की।

रेडियो मिर्ची तथा प्रमुख अरबी टीवी चैनल्स पर वार्ता का सीधा प्रसारण

रेडियो मिर्ची तथा प्रमुख अरबी टीवी चैनलों द्वारा आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को सीधे प्रसारण हेतु साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया गया था। इनमें शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने युग निर्माण मिशन और देव संस्कृति विश्वविद्यालय की विश्व के नवनिर्माण में भूमिका तथा संस्कार व जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा पर अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि जिंदगी कठिन नहीं है, लेकिन अपनी नासमझी से हम इसे कठिन बना लेते हैं। अध्यात्म हमें स्वयं को समझने और जीवन को सरल, सुखद बनाने का पाठ पढ़ाता है। रेडियो साक्षात्कारों में जन्मशताब्दी वर्ष और उससे संबंधित ज्योति कलश यात्राओं की भी जानकारी दी गई।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने रेडियो मिर्ची के म्यूजिक मैनेजर श्री संचारी मुखर्जी एवं अरबी चैनल के जनरल मैनेजर व डायरेक्टर श्री शेखर जी को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान किया। इस कार्यक्रम में खलीज टाइम्स से श्री हरजोत ओबेरॉय, गल्फ न्यूज दुबई से श्रीमती तरुणा संजनानी सहित अनेक प्रतिष्ठित टीवी और सोशल मीडिया चैनलों के पत्रकार एवं प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

रेडियो मिर्ची की सुश्री संचारी मुखर्जी को युग निर्माण सत्संकल्प भेंट करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

एक दीप, एक संकल्प : दीपयज्ञ एवं ज्योति कलश पूजन

इंडिया क्लब में ज्योति कलश पूजन तथा दीपयज्ञ का विशेष कार्यक्रम रखा गया। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं गायत्री विद्यापीठ की चेयरपर्सन आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी ने ज्योति कलश का पूजन कर दुबई में ज्योति कलश यात्रा संचालन की आवश्यकता और योजना पर प्रकाश डाला।

आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के दिव्य प्रेम की अनुभूतियाँ सुनाई और उनके त्यागमय जीवन की झलक प्रस्तुत की और युग निर्माण मिशन की महत्ता को मार्मिक प्रसंगों के माध्यम से समझाया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने आत्मीय स्वजनों तथा विशिष्ट अतिथियों से आत्मीय संवाद करते हुए अखंड दीपक के 100 वर्ष और परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के महत्त्व को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि दुबई में ज्योति कलश यात्रा आगामी 3 माह तक चलेगी। यह ओमान, दुबई, शारजाह, अबूधाबी, अजमान आदि क्षेत्रों में जाएगी। हर क्षेत्र में दीपयज्ञों के माध्यम से युग संदेश जन-जन तक पहुँचाया जाएगा।

इंडिया क्लब में आयोजित ज्योति कलश पूजन, दीपयज्ञ में आद. डॉक्टर चिन्मय जी एवं आदरणीया शेफाली जी के साथ दुबई के प्राणवान परिजन

कार्यक्रम में भारतीय संस्कृति पर आधारित मनोहारी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने सभी के हृदयों को भावविभोर कर दिया। डॉ. चिन्मय जी ने प्रश्नोत्तरी के माध्यम से श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। उन्होंने कहा कि यह सामान्य यज्ञ नहीं, हर हृदय में नवचेतना का दीप जलाने का विशिष्ट प्रयोग है। हर व्यक्ति को आत्मविकास और समाज सेवा के पथ पर अग्रसर करना इसका प्रमुख उद्देश्य है।

स्वजनों को भावविभोर करते पारिवारिक सम्मेलन

बाँये श्रीमती दक्षाबेन के घर और दायें श्री सुनील जागेटिया जी के घर परिजनों से मिले शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि दुबई के सिटी वॉक क्षेत्र में निवास करने वाले मिशन के प्रति समर्पित निष्ठावान अनेक परिजनों के घर गए। जहाँ पहुँचे, वहाँ श्रद्धा और उत्साह की अद्भुत लहर छा गई। सभी को युगतीर्थ की प्रखर प्राण चेतना के संचार की दिव्यानुभूतियाँ हुईं। सभी ने हृदय से स्वागत किया।

अल मनखूल में दक्षा बेन के घर पर महिला मंडल की 40 बहिनों से मुलाकात हुई। सभी को एक साथ शान्तिकुञ्ज आने का आमंत्रण भी दिया। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उन्हें जन्मशताब्दी वर्ष में परम वन्दनीया माताजी के विचार एवं मातृत्व भाव के विस्तार के लिए विशेष अभियान चलाने की प्रेरणा दी।

इसके पश्चात अल गरहौद क्षेत्र में निवास करने वाले गायत्री परिजन कौशल जी के घर पर उपस्थित परिजनों से भी मुलाकात की।

ज्योति कलश यात्रा एवं श्रद्धा-संवर्धन कार्यकर्त्ता गोष्ठी

दुबई के सिटी वॉक क्षेत्र में श्री सुनील जागेटिया जी के आवास पर दुबई में सक्रिय गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं के साथ श्रद्धा संवर्धन गोष्ठी हुई।

शेष समाचार पृष्ठ 7 पर पढ़ें .....

400 श्रमिकों को दिया 'श्रमेव जयते' का संदेश

दुबई में अल्क्रूज क्षेत्र स्थित फर्नीचर फैक्टरी के लेबर कैंप में स्वामी कृपाराम जी महाराज की भी गरिमामयी उपस्थिति में श्रमिकों के लाभार्थ एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ है। परमात्मा की इस अनमोल धरोहर का सम्मान करते हुए मानवता के सर्वोत्तम मूल्यों को अपने जीवन में उतारना चाहिए। उन्होंने सभा में उपस्थित 400 से अधिक श्रमिकों को नित्य 'युग निर्माण सत्संकल्प' को दोहराने और उन जीवन मूल्यों को अपने व्यक्तित्व में उतारने की प्रेरणा दी। समारोह के आरंभ में फैक्ट्री के सीईओ श्री गणेश सुथार जी ने सभी का हार्दिक स्वागत किया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया

भारत सहित पाँच देशों के साधक शामिल हुए

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस योग विद्या के सनातन गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने के उत्साह के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्री विद्यापीठ के कार्यकर्त्ता व विद्यार्थियों के साथ भारत के विभिन्न राज्यों से आए सैकड़ों योग साधकों ने भाग लिया। स्लोवाकिया, अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड और वियतनाम से आए योग प्रशिक्षु भी समारोह में शामिल हुए। सभी ने आयुष मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार योगाभ्यास किया। समारोह में परम पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रतिपादित शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक दृष्टि से व्यक्तित्व को समर्थ एवं सशक्त बनाने वाले यौगिक अभ्यासों और विचारों को भी बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया था।

समारोह की अध्यक्षता शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी ने की। उन्होंने कहा कि योग केवल एक दिन की क्रिया नहीं, यह जीवन भर चलने वाली साधना है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के योग प्रशिक्षक श्री रामावतार पाटीदार ने अंतर्राष्ट्रीय योग मानकों पर आधारित योगाभ्यास कराया।

श्रद्धेय का संदेश

अनुशासित, ऊर्जावान, ऊर्ध्वमुखी बनाता है योग

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने भारतीय संस्कृति का गौरव बढ़ा रहे समस्त योगाभ्यासियों को अपनी शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि योग अपने जीवन को नियमित, अनुशासित, ऊर्जावान तथा ऊर्ध्वमुखी बनाये रखने की विद्या है। उन्होंने गायत्री उपासना, साधना को भी जीवन-योग का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरण बताया।

विदेशों में सक्रिय शान्तिकुञ्ज की टोलियाँ

रूस में डॉ. ज्ञानेश्वर मिश्र, कनाडा में श्री बालरूप शर्मा, थाइलैण्ड में श्री जयराम मोटलानी, दुबई में देसंविवि के विद्यार्थी सहित इंग्लैण्ड, फीजी, न्यूजीलैण्ड, साउथ अफ्रीका आदि देशों में शान्तिकुञ्ज की टीम एवं देसंविवि के प्रशिक्षित योगाचार्यों ने योगाभ्यास कराया।

जन आन्दोलन बन रहा है आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान

उत्तराखंड के सभी सरकारी एवं गैर सरकारी आयुर्वेद एवं मेडिकल कॉलेजों में गर्भ संस्कार विषय पर वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध कराएगा गायत्री परिवार

अपर निदेशक, चिकित्सा शिक्षा निदेशालय, देहरादून द्वारा दिनांक 30 अप्रैल 2025 को उत्तराखंड राज्य के समस्त सरकारी/गैर सरकारी एलोपैथिक मेडिकल कॉलेजों एवं कुलसचिव, उत्तराखंड आयुर्वेद विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक 09 मई 2025 को उत्तराखंड राज्य के समस्त आयुर्वेदिक कॉलेजों के छात्र-छात्राओं को गर्भवती माता एवं गर्भस्थ शिशु के सर्वांगीण स्वास्थ्य (विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक के अनुरूप शिशु का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास) हेतु गायत्री परिवार से प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं द्वारा वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध कराये जाने के संदर्भ में आदेश पारित किया गया है। इसके अंतर्गत गायत्री परिवार के प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं द्वारा गर्भवती माता की जीवन शैली, आहार-विहार, योगासन, प्राणायाम, ध्यान, गर्भ संवाद एवं अन्य विषयों की जानकारी वैज्ञानिक आधार पर पीपीटी के माध्यम से दिए जाने का प्रावधान है।

एक विशिष्ट शासकीय आदेश अवसर का लाभ उठायें

प्राप्त जानकारी के अनुसार अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डाक्टर प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी श्रद्धेय डाक्टर प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी प्रमुख, गायत्री परिवार के मार्गदर्शन में चलाया जा रहा आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी कार्यक्रम जन-आंदोलन का रूप लेता चला जा रहा है। कई अन्य राज्यों के परिजन भी इस प्रकार का आदेश पारित करने के लिए अपने स्तर पर प्रयासरत हैं।

उक्त कार्यक्रम में बतायी गयी बातों का पूर्ण रूपेण पालन करने वाली गर्भवती माताओं के शिशुओं में जन्म से ही विशिष्ट गुणों का समावेश देखा जा रहा है, जिन पर शोध कार्य भी हो रहा है तथा उन्हें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशन हेतु प्रयास किया जा रहा है।

जहानाबाद बिहार के युवाओं के लिए विशेष शिविर

युवा मनों में उकेरी युगशक्ति गायत्री के व्यापक विस्तार की उमंग

शान्तिकुञ्ज में 22 से 24 जून की तिथियों में तीन दिवसीय युवा जागरण शिविर का भव्य आयोजन हुआ। इसमें जहानाबाद (बिहार) से आए 200 से अधिक प्राणवान, ऊर्जावान युवा शामिल हुए। समापन सत्र को संबोधित करते हुए शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी जी ने जहानाबाद में वृक्षारोपण, स्वच्छता एवं घर-घर युगशक्ति गायत्री के विस्तार के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। उन्होंने जन्मशताब्दी वर्ष में प्रतिभागियों द्वारा लिए गए रचनात्मक संकल्पों को वंदनीय और अनुकरणीय बताया।

युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज के राष्ट्रीय संयोजक श्री केदार प्रसाद दुबे एवं कई अन्य वरिष्ठ वक्ताओं ने शिविरार्थी युवाओं का बड़े विस्तार से मार्गदर्शन किया। उन्हें सेवा, समर्पण के लिए प्रेरित करने के साथ लोक नेतृत्व की कला, मिशन के अनुशासन तथा समाज के नवनिर्माण से जुड़े दायित्वों का पाठ पढ़ाया।

शिविर को संबोधित करते श्री योगेन्द्र गिरि, श्री के.पी. दुबे, श्रीवास्तव जी

हर प्रज्ञा मण्डल को सक्रिय करेंगे
प्रज्ञा अभियान के 1000 सदस्य बनाएँगे

जिला समन्वयक श्री अरविंद कुमार (हरि जी), श्री रंगेश कुमार, कौशल कुमार, श्यामनारायण कुमार आदि के मार्गदर्शन में सक्रियता के शानदार संकल्प उभरे। प्रज्ञा अभियान के साथ हुई एक विशेष गोष्ठी में युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने इन दिनों प्रज्ञा अभियान के माध्यम से उठी अभिनव क्रान्ति की लहर के अनुरूप अपने पूरे जिले में प्रज्ञा अभियान के 1000 से अधिक सदस्य बनाने और अपने जनसंपर्क अभियान को बढ़ाने का संकल्प लिया, ताकि इसके माध्यम से मिशन को समग्ररूप से गति दी जा सके।

ग्रीष्मावकाश में बच्चों के लिए एक मासीय शिविर

अत्यंत मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक था शिविर

आमतौर से गर्मी की छुट्टियों में बच्चों का समय मौज-मस्ती में ही बीत जाता है। लेकिन गायत्री परिवार देशभर में समर कैम्पों का आयोजन कर इन छुट्टियों को रोचक, ज्ञान एवं कौशल वर्धक बनाता है। शान्तिकुञ्ज में गायत्री विद्यापीठ में पढ़ने वाले अंतेवासी कार्यकर्त्ताओं और साधना शिविरों में भाग ले रहे परिजनों के बच्चों के लिए ऐसा ही एक मासीय शिविर का आयोजन किया गया। इसमें बच्चों को पेंटिंग, ड्राइंग, क्ले आर्ट, भाषण, संगीत, योग सहित बाल संस्कारशालाओं में पढ़ाए जाने वाले सिलेबस के माध्यम से भारतीय संस्कृति के विविध पहलुओं की जानकारी दी गई।

27 जून को ग्रीष्मकालीन शिविर का समापन समारोह गायत्री विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल की प्रमुख आदरणीया श्रीमती शैफाली पण्ड्या जी एवं शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी की मुख्य उपस्थिति में आयोजित हुआ, जिसमें बच्चों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करते हुए दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर

समर कैम्प के समापन समारोह में विशिष्ट अतिथियों के संग अपनी कला और कौशल का प्रदर्शन करने वाले बच्चे

दिया। उनकी संगीतमय योग और राष्ट्रीय भक्ति परक गीतों की प्रस्तुति पर लगातार तालियों की गड़गड़ाहट गूँजती रही।

आदरणीया श्रीमती शैफाली पण्ड्या जी ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चों का मन गीली मिट्टी की भांति होता है, जिसे जैसे ढालें, वैसा रूप ले लेता है। बच्चों को इस प्रकार का सृजनात्मक मार्गदर्शन मिलता रहे तो तमाम भटकावों से बचकर अपनी क्षमताओं का शानदार उपयोग कर सकते हैं। व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि ने कहा कि जीवन में जो व्यक्ति अवसर को पहचान लेता है, वही आगे बढ़ता है।

प्रदर्शनी : समापन समारोह में बच्चों द्वारा तैयार की गई कलाकृतियों की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। सभी दर्शकों ने बच्चों की रचनात्मकता की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

परमसत्ता में विलीन हो गए शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री सत्यप्रकाश पटेल

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के स्नेहांचल में पले, बढ़े, पढ़े और फिर जीवनभर मिशन की सेवा करते रहे श्री सत्यप्रकाश पटेल 29 जून 2025 को स्थूल देह को त्याग कर परम चेतना में विलीन हो गए। उन्होंने 56 वर्ष की उम्र में जीवन की अंतिम साँस ली। उनकी दोनों बेटियों दीपशिखा एवं सुस्मिता ने नम आँखों के साथ मुखाग्नि देकर अंतिम विदाइ दी। श्रद्धेया शैल जीजी, आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी, व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी, पिता श्री देवराम पटेल जी एवं माता श्रीमती सत्यवती पटेल सहित शान्तिकुञ्ज के सैकड़ों कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों ने स्व. सत्यप्रकाश पटेल को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए अंतिम यात्रा के लिए विदाई दी। अंतिम संस्कार के समय भी उनकी धर्मपत्नी लक्ष्मी पटेल, दोनों बेटियों और सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने मौन गायत्री महामंत्र का जप करते हुए उनकी आत्मा की शान्ति, सद्गति के लिए गुरुदेव-माताजी से प्रार्थना की।

सन् 1971 में परम पूज्य गुरुदेव के निर्देश पर श्री देवराम पटेल एवं श्रीमती सत्यवती देवी अपने दोनों बच्चे सत्यप्रकाश एवं ब्रह्मप्रकाश के साथ मथुरा से शान्तिकुञ्ज आ गए थे। उस समय स्व. सत्य प्रकाश जी की उम्र दो वर्ष थी। वे बलौदा, जिला जांजगीर (छत्तीसगढ़) के मूल निवासी थे। इन दिनों वे लम्बे समय से शान्तिकुञ्ज में पत्राचार विभाग में सेवाएँ प्रदान कर रहे थे।

स्वजनों को भावविभोर करते पारिवारिक सम्मेलन

(.....पृष्ठ 6 के शेष समाचार)

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने इस अवसर पर जन्मशताब्दी समारोह की सफलता हेतु अभीष्ट व्यक्तिगत और सामूहिक पुरुषार्थ के संदर्भ में मार्गदर्शन किया। उन्होंने गुरुदेव-माताजी के मार्मिक संस्मरण सुनाते हुए पूरे समर्पण भाव के साथ उनकी आशा-अपेक्षाओं पर खरा उतरने का आह्वान किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने परम पूज्य गुरुदेव का कथन दोहराया कि मनुष्य जीवन तो सरल है पर मनुष्यता कठिनाई से प्राप्त होती है। हमारा सौभाग्य है कि हमें उनके स्नेह-संरक्षण में युग निर्माण जैसी एक विराट क्रान्ति से जुड़कर अपने जीवन को धन्य बनाने का अवसर मिला है। युग परिवर्तन के महान यज्ञ में आहुतियों के पुण्य से हमें वह सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, जो ऋषि-मुनियों को कठिन तप से प्राप्त हुआ करता है।

आद. डॉ. चिन्मय जी ने दुबई में ज्योति कलश के संचालन संबंधी मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि यह ज्योति कलश यात्रा सबके हृदयों में उज्ज्वल भविष्य के लिए उम्मीद की ज्योति जलाएगी। जनमानस में नयी ऊर्जा, उत्साह और उज्ज्वल भविष्य के प्रति गहरा विश्वास जगाएगी।

डॉ. चिन्मय जी ने नवयुग के संविधान-युग निर्माण सत्संकल्प को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया। अगले दिन 13 जून को बे क्षेत्र में निवासरत जयपुर निवासी उद्योगपति श्री निखिल एवं श्रीमती प्रियंका अग्रवाल के घर अनेक गणमान्यों से सौजन्य भेंट हुई। इस अवसर पर कस्टर जे टावर से श्री रोहन रावल, मीडोज से श्री सुधीर जी, श्रीमती अल्पना तथा रोन्ली लिमिटेड के मटेरियल प्रमुख श्री राजेश पटेल प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

श्री रोहन अग्रवाल (कॉर्डिनेटर एवं मैनेजिंग पार्टनर, कैनरी आयलैंड प्रॉपर्टीज) एवं नेहा जेटवानी के निवास पर आयोजित प्राणिक हीलिंग ग्रुप को भी डॉ. पण्ड्या जी ने संबोधित किया।

इटली में आयोजित विश्व सम्मेलन में शान्तिकुञ्ज ने भारत का प्रतिनिधित्व किया

इटली की ऐतिहासिक संसद में आयोजित इस विश्व सम्मेलन में भाग लेने वाले 120 से अधिक देशों के राष्ट्राध्यक्षों, प्रधानमंत्रियों, सांसदों, मंत्रियों एवं धार्मिक प्रतिनिधियों तक पहुँचा युगदृष्टा परम पूज्य गुरुदेव का संदेश

"शिक्षा का उद्देश्य समझदारी, करुणा और संवेदनाओं का विकास है। स्वार्थ सिद्धि एवं भौतिक सुख साधनों की चाह में दौड़ रही मानवता को आज संयम और सादगी का पाठ पढ़ाने की आवश्यकता है।"

– आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी
प्रति कुलपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी पैनल चर्चा में युगऋषि का संदेश देते हुए

इटली की राजधानी रोम में दिनांक 19-21 जून 2025 की तिथियों में द्वितीय संसदीय अंतरधार्मिक संवाद सम्मेलन (पार्लियामेंटरी कॉन्फ्रेंस ऑन इंटरफेथ डायलॉग) का आयोजन हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस सम्मेलन में भारत का गौरवपूर्ण प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने तीनों दिन विभिन्न सत्रों में भागीदारी की। यह विश्व सम्मेलन इटली के ऐतिहासिक संसद भवन 'पालाज्जो मोंतेचितोरियो' में आयोजित किया गया था।

यह विश्व सम्मेलन इटैलियन पार्लियामेंट, इंटर-पार्लियामेंटरी यूनियन एण्ड रिलिजन्स फॉर पीस के संयुक्त सहयोग से आयोजित किया गया था। इसके माध्यम से सम्मेलन में भाग ले रहे 120 से अधिक देशों के राष्ट्राध्यक्षों, प्रधानमंत्रियों, सांसदों, मंत्रियों एवं धार्मिक प्रतिनिधियों के समक्ष युगदृष्टा परम पूज्य गुरुदेव का संदेश पहुँचा। डॉ. चिन्मय जी ने आशा व्यक्त की कि यह संवाद वैश्विक समुदाय में शान्ति एवं सद्भाव का विकास करेगा।

शिक्षा और नैतिक नेतृत्व पर उद्बोधन

इस सम्मेलन का मुख्य विषय था 'मानवता के सामूहिक उज्ज्वल भविष्य के लिए आशा और विश्वास को सशक्त बनाना'। भारत की ओर से भाग ले रहे एकमात्र वक्ता आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने इसके उद्घाटन सत्र में 'शिक्षा हेतु शांति' विषय से अपने विचार प्रस्तुत किए। भारतीय संस्कृति में शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को बड़े प्रभावशाली ढंग से रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य समझदारी, करुणा एवं संवेदनाओं का विकास है। स्वार्थ सिद्धि एवं भौतिक सुख साधनों की चाह में दौड़ रही मानवता को आज संयम और सादगी का पाठ पढ़ाने की आवश्यकता है। आज समाज में संघर्ष की मानसिकता बढ़ाने की नहीं, सहअस्तित्व का वातावरण बनाने की आवश्यकता है। यही वर्तमान समय की माँग है।

20 जून 2025 को मुख्य संसद भवन के चैम्बर ऑफ डिप्यूटीज में आयोजित उच्चस्तरीय पैनल चर्चा में आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने 'शांति के लिए शिक्षा और नैतिक नेतृत्व' विषय पर प्रभावशाली उद्बोधन दिया। उन्होंने देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में स्थापित दक्षिण एशियाई शांति एवं सुलह संस्थान के अध्यक्ष के रूप में भारतीय दृष्टिकोण से शिक्षा, जीवन मूल्य एवं अध्यात्म के अद्वैत संबंधों को रेखांकित किया।

पैनल चर्चा में शामिल हुई विशिष्ट हस्तियाँ

इस सत्र में मंच पर युनेस्को महासभा की अध्यक्षा राजदूत सिमोना-मिकुलेस्कु, यूरोपीय संसद की उपाध्यक्ष एंटोनेला सबरना, मिस्र के ग्रैंड मुफ्ती के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. इब्राहीम नेगम, अफ्रीकी युवा प्रतिनिधि जॉय मुतोनी गिताउ, रिलिजन्स फॉर पीस के महासचिव डॉ. फ्रांसिस कुरिया, डिकास्टरी फॉर एवैंजेलाइजेशन के प्रो-प्रीफेक्ट द मोस्ट रेवरेन्ड रिनो फिसिकेला तथा इंटरनेशनल पैनल ऑफ पार्लियामेंटेरियन्स फॉर फ्रीडम ऑफ रिलिजन ऑर बिलीफ की निदेशिका सुश्री फर्नान्डा सैन मार्टिन कारास्को जैसी विश्वविख्यात विभूतियाँ भी मंच पर उपस्थित रहीं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी विश्व सम्मेलन में अति विशिष्ट गणमान्यों से मुलाकात करते हुए

विशिष्ट महानुभावों से हुआ संवाद

द्वितीय संसदीय अंतरधार्मिक संवाद सम्मेलन में भाग लेने पहुँचे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अंतरराष्ट्रीय ख्याति के अनेक विशिष्ट गणमान्यों से शिष्टाचार भेंट की। उनके साथ परम पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रतिपादित 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' का दर्शन साझा किया और देव संस्कृति विश्वविद्यालय का परिचय दिया। वे जिन महानुभावों से मिले, उनमें प्रमुख हैं-

- राजदूत सिमोना मिकुलेस्कु, युनेस्को महासभा की अध्यक्ष
- डॉ. फ्रांसिस कुरिया, महासचिव, रिलिजन्स फॉर पीस
- द मोस्ट रेवरेन्ड रिनो फिसिकेला, प्रो-प्रीफेक्ट, डिकास्टरी फॉर एवैंजेलाइजेशन, वेटिकन
- डॉ. कैथरीन मार्शल, वरिष्ठ फैलो, बर्कले सेंटर फॉर रिलीजन, पीस एंड वर्ल्ड अफेयर्स
- शेख अल-महफूज बिन बय्याह, अबू धाबी फोरम फॉर पीस
- आर्चबिशप एंगेलोस, कोप्टिक ऑर्थोडॉक्स आर्चबिशप, लंदन
- रब्बी डेविड रोसेन, प्रमुख यहूदी धर्मगुरु, सह-अध्यक्ष, रिलिजन्स फॉर पीस
- डॉ. नाज़िला गनीया, संयुक्त राष्ट्र विशेष प्रतिनिधि, धार्मिक स्वतंत्रता

वेटिकन सिटी में 'भारतीय संस्कृति में योग' पर व्याख्यान

पोप लियो और प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी से भी मिले

वेटिकन सिटी, इटली में आयोजित सत्र की अध्यक्षता कर रहे पोप लियो तथा दायें प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी जी एवं अन्य गणमान्यों से मुलाकात करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

21 जून को द्वितीय पार्लियामेंटरी कॉन्फ्रेंस ऑन इंटरफेथ डायलॉग के अंतर्गत वेटिकन सिटी में विशेष सत्रों का आयोजन हुआ। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस भी मनाया गया। अति विशिष्ट गणमान्यों के साथ मंच साझा करते हुए युगऋषि के संदेश वाहक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भारतीय संस्कृति में योग की अवधारणा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति एक चेतना है जो आत्म-जागरण, संतुलन और वैश्विक समरसता का मार्ग प्रशस्त करती है। योग उसी संस्कृति की जीवनशैली है, जो मनुष्य को भीतर से रूपांतरित करती है।

उपस्थित वैश्विक शीर्षस्थ नेताओं ने भारतीय संस्कृति एवं योग दर्शन की महत्ता को बड़े ध्यान से सुना और कहा कि भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम् का भाव बड़ी गहराई से समाहित है।

इस अवसर पर आदरणीय डॉ. चिन्मय जी की माननीय पोप लियो एवं इटली की प्रधानमंत्री सुश्री जियोर्जिया मेलोनी से मुलाकात हुई। वे श्री लोरेन्जो फोंटाना अध्यक्ष-चेंबर ऑफ डिप्यूटीज, संसद श्री पियर फर्डिनांडो कासिनी, सेनेटर एवं आई.पी.यू. के मानद अध्यक्ष, इटालियन आईपीयू समूह के अध्यक्ष सहित अनेक शीर्षस्थ नेताओं से भी मिले। उन्हें युग निर्माण योजना एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के सेवा और साधना आधारित वैश्विक प्रयासों का परिचय दिया। सभी को युगऋषि द्वारा रचित सत्साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। सभी ने इन विचारों की हृदयतल से प्रशंसा की।

अन्य महान हस्तियों से चर्चा हुई

द्वितीय पार्लियामेंटरी कॉन्फ्रेंस ऑन इंटरफेथ डायलॉग के अंतर्गत तृतीय दिवस-21 जून 2025 के दिन वेटिकन सिटी में विशेष सत्रों का आयोजन किया गया था। आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने इनमें भाग लेने के साथ विभिन्न राष्ट्रों के शीर्ष संसदीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों से शिष्टाचार भेंट की। उन्हें भारत की वैदिक परंपरा, संवाद संस्कृति एवं पूज्य गुरुदेव के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के दृष्टिकोण से अवगत कराया। जिनसे मुलाकात हुई, उनमें प्रमुख थे-

- सुश्री तुलिया एक्सन, अध्यक्षा, इंटर-पार्लियामेंटरी यूनियन एवं राष्ट्रीय विधानसभा की अध्यक्षा, तंजानिया
- श्री पियर फर्डिनांडो कासिनी, सेनेटर, आई.पी.यू. के मानद अध्यक्ष एवं इटालियन आई.पी.यू. समूह के अध्यक्ष
- सुश्री फर्नान्डा सैन मार्टिन कारास्को, निदेशक, इंटरनेशनल पैनल ऑफ पार्लियामेंटेरियन्स फॉर फ्रीडम ऑफ रिलिजन ऑर बिलीफ, पूर्व सांसद, बोलिविया
- श्री अब्दुल्ला अल शेख, अध्यक्ष, शूरा काउंसिल, सऊदी अरब • श्री अहमद अल मुसलम, अध्यक्ष

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग धर्म समुदाय को संबोधन

30 से अधिक केंद्रों में होगा युग निर्माण सत्संकल्प का नियमित पाठ

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने योग धर्म समुदाय के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। इस विशिष्ट सत्संग में भाग ले रहे योगाभ्यासियों को संबोधित करते हुए उन्होंने योग को आंतरिक रूपांतरण का साधना मार्ग बताया। इस अवसर पर उन्होंने युग निर्माण सत्संकल्प का भावपूर्ण वाचन किया एवं उसके गूढ़ तात्त्विक अर्थ प्रस्तुत किए। योग धर्म समुदाय ने इन सत्संकल्पों को अपने जीवन का अंग बनाने का संकल्प लिया है। योग धर्म समुदाय का नेतृत्व कर रहे भाई हरि सिंह जी ने बताया कि आने वाले समय में इटली के 30 से अधिक केंद्रों पर युग निर्माण सत्संकल्प का सामूहिक वाचन होगा और इन्हें आचरण में उतारने की सतत् प्रेरणा दी जाएगी।

योग धर्म समुदाय के सदस्यों के बीच पहुँचे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

भाई हरि सिंह जी एक दशक पहले शान्तिकुञ्ज आए थे। तब से वे पूज्य गुरुदेव और वंदनीया माताजी को अपने शाश्वत आध्यात्मिक पथप्रदर्शक मानकर हजारों लोगों को भारतीय योग, अनुशासन और आंतरिक जागरण के पथ से जोड़ रहे हैं। डॉ. पण्ड्या जी ने भाई हरि सिंह जी एवं उनके समर्पित परिवार द्वारा योग के विस्तार के लिए पूरे यूरोप में किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक– प्रमोद शर्मा। **पता** :– शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 12.07.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26